

उमरह का आसान तरीका

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी

(साबिक उस्ताद, दारुल उलूम, नद्वतुल उलमा, लखनऊ)

मकतब: पयामे अमन

नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ, (यू0पी0)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

(H-60)

नाम- उमरह का आसान तरीका
संकलन कर्ता- मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी
संस्करण हिन्दी तृतीय
पुस्तक संख्या 3000
वर्ष 2023
मूल्य 20 रु०
प्रकाशक- मकतब: पयामे अमन, नदवा रोड,
डालीगंज, लखनऊ।
Writer- Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi
S. No. 2000
Publisher Maktaba Payam-e-Amn
Tagore Marg, Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)
Mobile- 0091-9918194339, 9984490150
E-Mail- jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com

मिलने के पते

1. मजलसे तहकीकात व नशरियाते इस्लाम, नद्वतुल उलमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) (0522-2741529)
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुहम्मद अली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई (0522-2741539)
3. अल फुरकान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) (9936635816)
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुहल्ला, जबलपुर (मध्य प्रदेश)
5. मकतब: शबाब जदीद, नदवा रोड (लखनऊ) (9198621671)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
प्रस्तावना.....	08
भाग-1—हज़ व उमरह से पहले कुछ अहम मश्वरे	
उमरह से पहले कुछ मश्वरे.....	10
पाक माल से उमरा.....	11
भाग-2—उमरह का मुख़्तसर तरीका और दुआएँ	
घर से बैतुल्लाह तक.....	21
घर से बाहर आने के बाद यह दुआ पढ़ें.....	23
भाग-3—हज़ और उमरह में फ़र्क	
हज़ और उमरह में फ़र्क.....	44
एहराम का बयान.....	47
मीकात.....	47
एहराम पहनने का तरीका.....	48
औरतों का एहराम.....	49
एहराम में जो चीज़ें मना हैं.....	50

विषय	पृष्ठ सं०
एहराम में जायज़ काम.....	52
उमरह का बयान.....	53
उमरह में ज़रूरी बातें.....	55
तवाफ़.....	56
तवाफ़ की नियत.....	56
तवाफ़ के अरक़ान.....	57
तवाफ़ की शर्तें.....	57
तवाफ़ के वाजिबात.....	58
तवाफ़ की सुन्नतें.....	58
तवाफ़ के मुस्तहबात.....	59
तवाफ़ में मुबाह चीज़ें.....	60
तवाफ़ में हराम चीज़ें.....	60
तवाफ़ की मकरुह चीज़ें.....	61
तवाफ़ की किस्में.....	62
नफ़्ती तवाफ़ का वक़्त.....	66
तवाफ़ करने का तरीका.....	66
सअी का रुक्न.....	73
सअी की शर्तें.....	73
सअी के वाजिबात.....	75

विषय	पृष्ठ सं०
सअी की सुन्नतें.....	76
सअी के मुस्तहबात.....	77
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम.....	79
की दुआओं का तर्जुमः	
तवाफ़े विदाअ.....	84

भाग-4—जिनायात

जिनायात (तावान या जुर्माना).....	89
दम.....	89
बुद्ना.....	89
सद्का.....	90
मक्का के तारीखी मकामात.....	90

भाग-5—मदीना मुनव्वरह और मस्जिदे नबवी में दाखिला का तरीका

मदीना मुनव्वरह और मस्जिदे नबवी में.....	95
दाखिला का तरीका एक नज़र में	

भाग-6—मदीना मुनव्वरह का सफ़र

मदीना मुनव्वरह का सफ़र.....	100
-----------------------------	-----

विषय	पृष्ठ सं०
मस्जिदे नबवी के करीब.....	101
रौज़-ए-अक्दस पर सलाम पढ़ने का तरीका.....	103
ज़ियारत के वक्त.....	111
मस्जिदे कुबा और जन्नतुल्ल बकीअ की ज़ियारत.....	112
कब्रों की ज़ियारत के वक्त.....	113
मदीना मुनव्वरह के अहम मकामात.....	115
उहद का पहाड़.....	116
ख़न्दक.....	117
जन्नतुल्ल बकीअ.....	118
मस्जिदे नबवी के सात सुतून.....	118

भाग-7—उमरह से मुतअल्लिक़ ग़ल्लियाँ

तवाफ़ की ग़ल्लियाँ.....	122
सअी की ग़ल्लियाँ.....	124
अरफ़ात की ग़ल्लियाँ.....	125
कुछ ख़ास लफ़्ज़ों की तशरीह.....	126

भाग-8—उमरह करने का मुख़्तसर तरीका

उमरह के अरकान.....	132
नियत और एहराम बाँधने का तरीका.....	132

प्रस्तावना

हज़ भी नमाज़, रोज़ः और ज़कात की तरह इस्लाम का एक अहम रुक्न है। जिस शख्स में हज़ की शर्तें पाई जाएँ उस पर हज़ फ़र्ज़ होता है और दूसरों के लिए नफ़ल जो एक लाज़िमी हुक्म है।

हज़रत इब्राहीम (अलै०) ने दुआ की कि “मैं अपनी औलाद को आप के अज़ीम घर के पास आबाद करता हूँ। आप कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ मायल कर दीजिए”। (सूरः इब्राहीम)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि “जो शख्स हज़ का इरादा करे तो उसको जल्दी करना चाहिए”। (मिशक़ात)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि “रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हज़ करने वाले और उमरा करने वाले अल्लाह तआला के मेहमान हैं अगर वह दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला उनकी दुआ कुबूल करता है और अगर वह उससे मरिफ़रत

चाहते हैं तो वह उनकी मरिफ़रत करता है”। (मिशक़ात)

कुर्आन और हदीस से हज़ की फ़र्ज़ियत और फ़ज़ायल मालूम होते हैं जो इस उम्मत के लिए अहम फ़रीज़ा हैं। इस को सामने रखते हुए ज़रूरत इस बात की थी कि आसान हिन्दी में हज़ और उमरा के फ़रायज़, अरकान और ज़रूरी मसायल से मुतअल्लिक़ कोई हिन्दी में ऐसी किताब हो जो हर मौके पर रहनुमाई कर सके।

अल्हम्दुलिल्लाह इस किताब में इन तमाम बातों की रिआयत रखी गई है जैसे- इसमें हज़ व उमरा का मक्सद, उसकी फ़जीलत, वाजिब होने की शर्तें, एहक़ाम, एहराम, फ़रायज़, वाजिबात, सुन्नतें, उमरह का मुकम्मल तरीका, मक्का व मदीना के अहम मसायल और तारीखी मकामात का तफ़सील से ज़िक्र है, जिससे हाजी को हर मौके पर रहनुमाई मिलती है।

मुहम्मद सरवर फ़ारूकी नदवी
दारुल उलूम नदवतुल उल्मा, लखनऊ
9-12-2017

भाग-1

उमरह करने से पहले कुछ अहम मश्वरे

उमरह से पहले कुछ मश्वरे

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ
لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكُ لَا
شَرِيكَ لَكَ

“लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक-ला-शरीका- लका-
लब्बैक इन्नलहुम्दा-वन्नेअमता-लका-वलमुल्क-ला-
शरीका-लक”

(हाज़िर हूँ मैं, ऐ अल्लाह, हाज़िर हूँ मैं, हाज़िर हूँ मैं। तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ बेशक तमामतर तअरीफ़ और इन्आम तेरा ही है और सल्लनत भी तेरी ही है, तेरा कोई शरीक नहीं है।) (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज-1449)

- (1) जब कोई हज या उमरह के सफ़र का इरादह करे तो उसे चाहिए कि वह ऊपर दिये गये शब्दों और तमाम गुनाहों से दिल से तौब: करे और

हज व उमरह के लिए इलाल माल इस्तेमाल करे और उसके ज़िम्मे अगर कर्ज़ हो तो उसकी अदायगी करे और अगर उसके पास किसी का माल या कोई हक् बाकी हो तो सफ़र से पहले उसको उन तक वापस कर दे या उनसे माफ़ करवा ले।

पाक माल से उमरह-

तब्रानी ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब आदमी पाकीज़ह ज़ादे सफ़र के साथ हज के लिए निकलता है और अपना पैर सवारी के रिकाब में रखकर लब्बैक पुकारता है तो उसको आसमान से एक पुकारने वाला जवाब देता है कि तेरी लब्बैक कुबूल और रहमते इलाही तुझ पर नाज़िल हो। तेरा तोशा इलाल और तेरी सवारी इलाल और तेरा हज मक्बूल है, गुनाहों से पाक है।

और जब आदमी हराम कमाई के साथ हज के

लिए निकलता है फिर सवारी के रिकाब में पैर रखकर लम्बैक पुकारता है तो आसमान से एक पुकारने वाला जवाब देता है कि तेरी लम्बैक कुबूल नहीं, न तुझ पर अल्लाह की रहमत हो, तेरा ज़ादे सफ़र हराम, तेरी कमाई हराम और तेरा हज़ ग़ैर मक्बूल हो। (तब्रानी)

- (2) इसी तरह शिर्क, झूठ, ग़ीबत, चुगलखोरी और दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने से अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे।
- (3) उमरह के ज़रिये अल्लाह तआला को राज़ी करना मक्सद हो।
- (4) उमरह करने वाले को चाहिए कि हज़ से पहले उमरह के मसायल किसी मोअतबर आलिम से सीखे, दर्याफ़्त करता रहे और कोई मोअतबर किताब साथ रखे और उसको बार-बार पढ़ता रहे।
- (5) सफ़र में कोई अच्छा साथी तलाश कर ले, अगर आलिम बाअमल मिल जाये तो बहुत अच्छा है

- (9) सफ़र में जो शख्स होशियार, दीनदार, तजुर्बेकार, इल्म वाला हो उसको अमीर बना लें।
- (10) सफ़र में भी नमाज़ का एहतिमाम ज़रूरी है। आमतौर पर लोग कज़ा कर देते हैं, जो सख़्त गुनाह है।
- (11) मुसाफ़िर के लिए नमाज़ में क़स्र है। इसलिए मुसाफ़िर की नमाज़ का तरीका, तयम्मूम का तरीका और जहाज़ में नमाज़ पढ़ने का तरीका और किब्ला के रुख़ के बारे में ज़रूर मालूमात हासिल कर लेना चाहिए।
- (12) इसी तरह इस सफ़र में ज़िना, लवातत, चोरी, सूदखोरी, मामलात में धोखा, अमानत में ख़यानत, नशा वाली चीज़ें या बीड़ी सिगरेट पीने, कपड़ों का टखने से नीचे लट्काने, घमण्ड, हसद, रियाकारी, ग़ीबत, चुगलखोरी, मुसलमानों का मज़ाक़, होटल या कहीं टी०वी० व वीडियो, मोबाइल या इण्टरनेट का गुलत

- ताकि हज़ के अहक़ाम में मदद मिल सके, रफ़ीक़ अगर अजनबी हो तो ज़्यादाह अच्छा होता है।
- (6) सफ़र में फुजूख़र्ची और कंजूसी न करे, इसलिए कि जो रुपया उमरह में ख़र्च होता है उसका सवाब सात गुना या उससे ज़्यादा मिलता है।
 - (7) अपने साथ खाने में किसी को शरीक न करे तो बेहतर होता है। इसलिए कि अक्सर इख़िलाफ़ पैदा हो जाता है और अगर शरीक करना हो तो अपने हक़ से कम पर राज़ी रहे।
 - (8) घर से निकलते वक़्त निहायत खुश व ख़ुर्रम होकर निकले, गुमगीन और रोता हुआ न निकले। घर से निकलने से पहले और बाद में कुछ सद्क़ः कर दे और घर में दो रकअत नफ़ल नमाज़ हाज़त पढ़ ले और अल्लाह से मदद और सहूलत की दुआ माँगे और अपने दोस्तों, पड़ोसियों वग़ैरह से माफ़ी माँग ले और दुआ का एहतिमाम रखे।

- इस्तेमाल करने और तस्वीरें खींचने से परहेज़ करना चाहिए। इसलिए कि जिस तरह हरम की नेकी का सवाब बहुत है उसी तरह हरम की बुराईयाँ भी बहुत सख़्त हैं। इस से हुज्जाज को बचना चाहिए।
- (12) अगर किसी बीमारी या ख़ौफ़ की वजह से महरम को डर हो कि वह अपना हज़ मुकम्मल न कर पाएगा तो बेहतर यह है कि नियत करते वक़्त इन अल्फ़ाज़ का भी इज़ाफ़ा करे **اَللّٰهُمَّ اِنَّ مَحَلِّي حَيْثُ حَمَسْتَنِي** यानी “ऐ अल्लाह! तू मुझे जहाँ रोक दे वहीं इलाल हो जाऊँगा”।
 - (13) छोटे बच्चे और छोटी बच्ची का हज़ सही होगा लेकिन बुलूग़त के बाद फ़र्ज़ हज़ उस की तरफ़ से काफ़ी न होगा
 - (14) किसी ग़ैर महरम को हरगिज़ साथ में न लाना चाहिए, इसलिए कि तमाम एहतियात के बावजूद शरई पर्दे की पाबन्दियाँ नहीं हो पातीं।

- (15) हज या उमरह के सफर में शौहर या महरम के साथ होने के सिलसिले में मुख्तलिफ़ फ़िक्ही मस्लक हैं और फुक्हा ने तवील बहस की है। इस में इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के नज़्दीक सफरे हज में औरत के साथ महरम का होना ज़रूरी है और अगर दूसरी शरायत की वजह से किसी औरत पर हज फ़र्ज़ है मगर वह महरम को साथ ले जाने से कासिर है तो उस पर हज फ़र्ज़ न होगा।

और यह भी ज़रूरी है कि यह महरम आक़िल, बालिग़, दीनदार और काबिले एतिमाद शख्स हो, नादान बच्चे या फ़ासिफ़ नाकाबिले एतिमाद शख्स के साथ सफर जायज़ नहीं।

इस के साथ-साथ औरत को वजूबे हज की चौथी शर्त में यह भी पेशेनज़र रखना चाहिये कि सफरे हज में (अगर औरत किसी को साथ ले जा रही है तो) साथ में ले जाने वाले महरम के मसारिफ़े

सफर की ज़िम्मेदारी भी हज के लिये जाने वाली ख़ातून पर ही होगी। (हिदाया हिस्सा-1)

चाहे इदत वफ़ात की हो या तलाक़ की हर हाल में दौराने इदत हज वाजिब न होगा।

(आलमगीरी हिस्सा 1 पेज नं० 141)

- (16) मोबाइल से बहुत परहेज़ करना चाहिए। मोबाइल की वजह से यकसुई बिल्कुल नहीं हो पाती। इसलिए मोबाइल बन्द रखना चाहिए सिर्फ़ एक घण्टा कोई मुतय्यन कर लें, जिस वक़्त मोबाइल खुला रखे तो बेहतर है।
- (17) मक्का पहुँचने के बाद हरम थोड़ा आराम कर के जायें इसलिए कि वहाँ तवाफ़ और सअी दोनों करनी होती है जिसमें काफ़ी वक़्त लगता है लेकिन मदीना में आराम करने की ज़रूरत नहीं होती इसलिए कि वहाँ तवाफ़ नहीं करना होता।
- (18) कमरा में पर्दे लगाने के लिए एक या दो चादर इसी तरह चिमटी, आलपीन कुछ रख लें तो

बेहतर है जिससे अगर कमरे में कोई ग़ैर महरम हो तो पर्दा लगाया जा सके।

- (19) औरतों के लिए हैट वाली टोपी लगाकर नकाब की पट्टी ऊपर से डाल कर पर्दा करने में आसानी होती है, इसलिए औरतों को हैट टोपी रख लेना बेहतर होगा।
- (20) चार जोड़े कपड़े और दो जोड़ा एहराम और दो जोड़ा चप्पल रखना बेहतर है।
- (21) एक बैग़ तक्रीबन 12 इंच ऊँचा और छः इंच चौड़ा जिसमें एक जोड़ा कपड़ा, एक जोड़ा चप्पल और एक किताब रखकर तवाफ़ किया जा सकता हो।
- (22) कोई मस्ला पूछना हो तो कसी आलिम से दर्याफ़्त करें।
- (23) एक छोटा कुर्आन साथ रखना चाहिए ताकि आसानी हो इसलिए कि कुर्आन मजीद का एक दौर करना मुस्तहब है।

- (24) हम लोग तहज्जुद में आते और फ़ज़्र के बाद तवाफ़ करते। उसके बाद तिलावत करते फिर इशराक़ पढ़कर कमरे आते, नाश्ता करके थोड़ा आराम करते फिर खाना खाकर सुबह 11:00 बजे हरम दोबारा आ जाते उस के बाद अ़िश़ा पढ़कर तवाफ़ कर के वापस जाते।



भाग-2

उमरह का मुख़्तसर तरीका और दुआएँ

घर से बैतुल्लाह तक

पहनी जा सकती हैं वरना साफ़ कपड़े पहने ले और बदन पर खुशबू लगाए। (बुखारी)

अगर हवाई जहाज़ से जाना हो तो हैंडबैग में एहराम की दो चादरें, एक जोड़ा हवाई चप्पल (जिस से पैर के ऊपर वाली हड्डी बन्द न हो) और पासपोर्ट व सफ़र से मुतअल्लिक़ पैसे व कागज़ात रख ले फिर एहराम जहाज़ पर चढ़ने से पहले एयरपोर्ट पर पहन ले।

③ घर से निकलने से पहले अगर मकरुह वक़्त न हो तो दो रकअत नफ़ल नमाज़ हाजत पढ़कर कुबूलियत और सफ़र के सहूलत के लिये दुआ कर ले और घर से निकलते वक़्त यह दुआ करें:-

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ وَلَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि, वला हौला वला कुव्वता
इल्ला बिल्लाहि

(बस अल्लाह का नाम ले कर निकलता हूँ और

घर से बैतुल्लाह तक

① हज़ या उमरह करने वाले को चाहिये कि जाने से पहले शिर्क से तौब: कर ले और अगर किसी से कर्ज़ लिया हो तो अदा कर दे। इसी तरह अगर किसी को तक्लीफ़ पहुँचाई हो तो उस से माफी माँग ले और दो बैगों में सामान रख ले तो बेहतर है। बड़े बैग में कपड़े आदि रखे इसलिए कि वह लगेज में चला जाता है और दूसरा छोटा हैंडबैग रखे जो साथ में रहता है।

② उमरह करने के लिये पहले नाखून और जिस्म की सफ़ाई कर के गुस्ल करे। (तिर्मिज़ी-83)
जिस में तीन बातों का ख़याल रखें।

(i) गुस्ल के वक़्त मुँह भर कर कुल्ली करना।

(ii) नाक में नर्म हड्डी तक पानी पहुँचाना।

(iii) पूरे जिस्म पर पानी बहाना।

गुस्ल के बाद घर से भी एहराम की चादरें

नहीं है ताक़त नेकी करने की और बदी से बचने की। मगर तौफीक़े इलाही से जो बुलन्द शान वाला और बुर्जुगी वाला है) मैं ने भरोसा किया अल्लाह पर ऐ अल्लाह! मुझे इस बात की तौफीक़ दे जिसे तू पसन्द करता है और जिस से तू खुश होता है और मुझे मरदूद शैतान से महफूज़ रख।

घर से बाहर आने के बाद यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ
اَوْ اَزِلَّ اَوْ اُزَلَ اَوْ اُظْلِمَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ (ابوداؤد ५००२)
بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ
اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ (ترمذی ३३२६)
اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِيْ لِمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى وَاَعِصْنِيْ
مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका अन अज़िल्ला औ ओज़िल्ला
औ अज़िल्ला औ अज़िल्मा औ युज़हला अलय्या।

(अबूदाऊद-5094) बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिलअलीय्यील अज़ीम। अल्लाहुम्मा वफ़िफ़कनी लिमा तुहिब्बु वतरज़ा वअसिम्नी मिनशैतानिर्रजीम।

ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस से कि खुद गुमराह हो जाऊँ या गुमराह किया जाऊँ या जुल्म करूँ या मज़लूम बनूँ या बेवकूफी करूँ या बेवकूफ बनाया जाऊँ। मैं अल्लाह का नाम लेकर (निकलता हूँ) अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूँ। नहीं है ताक़त नेकी करने की और न बदी से बचने की मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से जो बहुत बुलन्द अज़मत वाला है। ऐ अल्लाह! मुझे इस चीज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जिसे तू अच्छा समझता है और जिस से तू राज़ी होता है और बचा ले मुझे मरदूद शैतान से”।

हाजी को अल्लविदाअ कहने की दुआ

اَسْتَوْدِعُ اللهَ دِيْنَكُمْ وَاَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ
اَعْمَالِكُمْ - (ترمذی: ۳۴۴۲)

اَلْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ - (مسلم: ३४५०, तर्मذی: ३४४८)

अनुवाद- “अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। पाक है वह ज़ात जिस ने इस सवारी को हमारा पाबन्द किया हालाँकि हम इसे काबू में नहीं ला सकते थे और यकीनन हम अपने रब ही की तरफ़ वापस जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! हम तुझ से अपने इस सफ़र में नेकी और तक्वा का सवाल करते हैं और ऐसे अमल का (सवाल करते हैं) जिसे तू पसन्द फ़रमाए। ऐ अल्लाह! हमारा यह सफ़र हम पर आसान फ़रमा दे और हम से उस की लम्बी मुसाफ़त लपेट दे। ऐ अल्लाह! तू ही इस सफ़र में (हमारा) साथी है और घर (माल व दौलत) में निगेहबान है। इलाही! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस सफ़र की मुशक्क़त से, उस के तक्लीफ़देह मन्ज़र से और माल और अहले में बड़ी वापसी से”।

④ औरतों का एहराम सिले हुये कपड़े ही होते हैं सिर्फ़ उन्हें सर के बालों को एक रुमाल से बाँध

“अस्तौदिऊल्लाहा दीनकुम व अमानताका व ख़वातीमा अअमालकुम”।

लोगों से मुसाफ़ह करते वक़्त

يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ

अनुवाद- अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए।

सवारी पर बैठने के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ
لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا
لَمُنْقَلِبُونَ. (الزخرف: १३, مسلم: ३४४८)

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَىٰ
وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَىٰ. اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا
هَذَا وَاِطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصّٰحِبُ فِي
السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ
بِكَ مِنْ وَعَثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ

लेना काफ़ी होता है ताकि कोई बाल नंगा न रहे और चेहरे पर कपड़ा इस तरह लटकाये कि कपड़ा चेहरे को न लगे। इस के लिये अगर कैप लगाकर ऊपर से नकाब की पट्टी डाल ले तो बेहतर है और अगर औरत को हैज़ आ रहा हो तो हर अमल करेगी लेकिन तवाफ़ या नमाज़ जब तक पाक न हो जाये उस वक़्त तक नहीं करेगी।

⑤ जब जहाज़ पर जाने के लिये अन्दर एयरपोर्ट पर पहुँचे तो एहराम पहन ले लेकिन ‘लब्बैक’ और नियत अभी न करे और अगर मौक़ा हो तो दो रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़ ले जिस में पहली रकअत में सूर: फ़ातिहा के बाद सूर: काफ़िरून ‘कुल या अय्युहल काफ़िरून’ और दूसरी रकअत में सूर: इज़्लास यानी ‘कुल हुवल्लाह’ पढ़े।

(हिन्दिया-1/223)

⑥ हवाई जहाज़ पर बैठने के बाद जब कुछ वक़्त गुज़र जाये तो नियत इस तरह करे-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُرِيْدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْ لِيْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّيْ -

अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल् उमरता फयसिरहु ली वतकब्बलहु मिन्नी। (बुखारी-1554 व मुस्लिम-2814)

अनुवाद- (“ऐ अल्लाह! मैं उमरह की नियत करता हूँ, तू उसे मेरे लिये आसान कर दे और मेरी तरफ से उसे कुबूल फरमा”)।

- 7 फिर लब्बैक तीन मर्तबः पढ़े मर्द बुलन्द आवाज़ से और औरतें आहिस्ता आवाज़ से। (शामी- 2/171)

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ
لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْهُلْكَ لَا
شَرِيكَ لَكَ

“लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक लब्बैक ला शरीका लका लब्बैक इन्ल्हम्दा वन्निअमता लका वलमुल्कु ला शरीका लका”।
(अबूदाऊद-1770)

अनुवाद- हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह हाज़िर हूँ मैं हाज़िर मैं तेरा कोई शरीक नहीं मैं हाज़िर हूँ बेशक तमामतर तअरीफ और इन्आम तेरा ही है और सल्लनत भी तेरी ही है, तेरा कोई शरीक नहीं है। (सहीह बुखारी)

ही गाड़ी पर रखवाये और चेक कर ले। फिर मक्का नज़र आये तो यह दुआ करें-

اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي فِيهَا قَرَارًا وَارْزُقْنِي فِيهَا رِزْقًا
حَلَالًا

“अल्लाहुम्माजअल ली बिहा करारव्वरजुकनी फीहा रिज़्कन हलाला”।

अनुवाद- (“ऐ अल्लाह! मुझे इस में करार और हलाल रोज़ी अता फरमा दे”)।

- 12 मक्का में ‘बाबुल्मअला’ की तरफ से दाखिल होना अफ़ज़ल है, लेकिन अब मुश्किल है।
13 मक्का पहुँच कर आमतौर से कयामगाह गाड़ी वाले पहुँचाते हैं वहाँ थोड़ा आराम कर ले तो बेहतर है। उस के बाद मस्जिदे ह़राम आये लेकिन कोई भी नमाज़ जमाअत से छूटने न पाये, बल्कि कअबः के सामने ही पाँचों नमाज़ों का एहतिमाम करे तो बेहतर है।

- 14 जब मस्जिदे ह़राम में दाखिल हो तो यह दुआ पढ़े:-

- 8 फिर दुरुद शरीफ पढ़े।

- 9 फिर यह दुआ पढ़े-

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ
سَخَطِكَ وَالنَّارِ

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका रिज़ाका वलजन्नता वऊजुबिका मिन सख़तिका वन्नार”।

अनुवाद- (“ऐ अल्लाह! मैं खुशनूदी चाहता हूँ और तुझ से जन्नत का तलबगार हूँ और तेरी गिरफ्त और तेरे जहन्नम की आग से पनाह माँगता हूँ”)।

- 10 अब नियत हो गई इसलिए मर्द बुलन्द आवाज़ से और औरतें आहिस्ता-आहिस्ता जब तक हरम न पहुँचें बराबर तल्बिया पढ़ते रहें। एहराम की हालत में हरम पहुँचने से पहले तक तल्बिया सब से अफ़ज़ल जि़क़ है।

- 11 जहाज जद्दा एयरपोर्ट पर आमतौर से उतरता है फिर वहाँ से छोटी या बड़ी गाड़ी से मक्का जाया जाता है जिस में अपने सामान को अपने

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ - اللَّهُمَّ
افتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

(⁽¹⁾ سنن ابن ماجه: 471), (⁽²⁾ ترمذی: 313), (⁽³⁾ مسلم: 413)

“बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मप्रतहली अब्बाबा रहमतिक”

- 15 जब बैतुल्लाह पर नज़र पड़े तो यह दुआ पढ़े-

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

“अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर लाइलाहा इल्लल्लाह”

- 16 फिर दुरुद शरीफ पढ़े।

- 17 फिर अपनी भाषा में ख़ूब जो चाहे दुआ करे।

- 18 इस के बाद यहाँ छः काम करना है तीन काम हज़रे अस्वद पर पहुँचने से पहले और तीन काम हज़रे अस्वद के सामने।

- (i) तल्बिया पढ़ना बन्द कर दे।

(सुनन कुबरा अल् बैहकी- 5/104)

- (ii) इज्तिबाअ करे यानी ऊपर वाली चादर को दाहिने

बगल से निकाल कर बाएँ कंधे पर डाल ले।
(बुखारी-161)

(iii) फिर तवाफ करने की नियत करे।

● इसी तरह यह तीन काम हज़रे अस्वद के सामने करे।

(i) फिर हज़रे अस्वद के दायीं ओर रुक्न यमानी की तरफ़ इस तरह खड़े हो कि पूरा हज़रे अस्वद आपके दायीं ओर हो। (तिर्मिज़ी-854)

(ii) और क़अबः सामने रहे और यह दुआ पढ़ते हुए हाथ कानों तक उठाये।

”بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ“ (مسند احمد: १२/१)

अनुवाद- बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर

(iii) फिर हज़रे अस्वद के पास जाये अगर चूम सकता हो तो चूमे या हाथ लगा कर हाथ चूम ले वरना दाहिना हाथ उठा कर हज़रे अस्वद के सामने कर के दाहिना हाथ बिना चूमे छोड़ दे। (इस को इस्तिलाम कहते हैं।)

इसी तरह हर चक्कर के शुरू करने से पहले इस्तिलाम करे यानी दाहिना हाथ उठा कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल्ल हम्द पढ़े और हाथों को गिरा दे।

19 तवाफ़ शुरू कर के यह दुआ करे।

اللَّهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ، وَتَصَدِيقًا بِكِتَابِكَ، وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ، وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
”اللَّهُمَّ اِنِّي اَسْأَلُكَ رَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ“

“अल्लाहुम्मा ईमानन् बिका वतस्दीकन बिकिताबिका ववाफअन बिअहदिका वइत्तिबाअन लिसुन्नति नबीयिका मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम”।

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका राहतन इन्दल मौति वल्अफवा इन्दल् हिसाब”।

● (ऐ अल्लाह! तुझ पर ईमान लाते हुए ओर तेरे

अहकाम की तस्दीक करते हुए और तेरे अहद को पूरा करने के लिए और तेरे नबी बरहक़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की इत्तिबाअ में यह तवाफ़ करता हूँ।

नोट- आमतौर से लोग हर चक्कर की अलग-अलग दुआएँ पढ़ते हैं जबकि हर चक्कर की अलग-अलग दुआएँ सुन्नत से साबित नहीं हैं, इसलिये जो दुआ याद हो माँगें वरना सुब्हाल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहुअ अकबर पढ़ें और अपनी ज़बान में दुआ करता रहे।

20 और तीन चक्कर में मर्द रमल करें (यानी अकड़ कर चले।)

21 इस तरह एक चक्कर जब हज़रे अस्वद का पूरा हो जाये तो अगर हज़रे अस्वद को बोसा दे सकता हो तो बोसा दे वरना दाहिना हाथ अगर हज़रे अस्वद को लगा सकता हो तो हाथ

लगा कर चूम ले और अगर हाथ न लगा सकता हो तो केवल दाहिने हाथ से इशारा करके बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल्ल हम्द पढ़ते हुये दाहिना हाथ बिना चूमे गिरा दे और आगे बढ़कर दूसरा चक्का शुरू कर दे।

22 मख़सूस दुआएँ शरीअत से साबित नहीं हैं।

23 अल्बत्ता रुक्न यमानी के पास जब पहुँचे तो उस पर दोनों हाथ फेरे या सिर्फ़ दाहिना हाथ फेरे लेकिन बोसा न दे और यह दुआ पढ़े:-

اللَّهُمَّ اِنِّي اَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمَغَافَةَ
الدَّائِمَةَ فِي الدِّينِ وَالْ دُنْيَا وَالْآخِرَةِ وَالْفَوْزَ
بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल् अफवा वल् आफियता वल् मुआफातद्दाइमता फिद् दीनी वद्दुनिया वल्आखिरति वल्फौज़ा बिल्जन्नती वन्नजाता मिनन् नार”।

24 जब रुक्न यमानी से आगे बढ़े तो हज़रे अस्वद

से पहले यह दुआ कर सकते हैं-

رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقَدْ آتَيْنَاكَ عَذَابَ النَّارِ - وَأَدْخَلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْأَبْرَارِ يَا عَزِيزُ يَا غَفَّارُ - يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ. (अबूदाऊद-1892)

“रब्बना आतिना फिदुनिया इसानतव वफिल आखिरति इसानतव वकिना अज़ाबन्नार वअदखिलनल् जन्नता मअल् अबरार या अज़ीजु या ग़फ़ार या रब्बल आलमीन”

25 एक चक्कर हज़रे अस्वद पर पूरा होने पर इस्तिताम करे और अगला चक्कर शुरू करे।

26 जिस वक़्त मुल्तज़िम के सामने आये तो यह दुआ कर सकते हैं-

“अल्लाहुम्मा ईमानन् बिका वतस्दीकन बिका ववफ़ाअन बिअहदिका वइत्तिबाअन लिसुन्नति नबीयिका मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम”।

27 मक़ामे इब्राहीम के पास आये तो यह दुआ कर सकते हैं-

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْحَرَمُ حَرَمُكَ وَالْاَمْنُ اَمْنُكَ وَالْعَبْدُ عَبْدُكَ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَبْنُ عَبْدِكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَايِدِيكَ مِنَ النَّارِ. (अबूदाऊद-1892)

“अल्लाहुम्मा इन्ना हाज़ाल् बैता बैतुका वलहरमु हरमुका वल् अम्नु अम्नुका वल् अब्दु अब्दका वअना अब्दुका वबु अब्दिका वहाज़ा मक़ामुल् आइज़िबिका मिनन् नारि”।

28 और जब रुकने शामी शिमाली मशरकी गोशा के पास आये तो यह दुआ कर सकते हैं-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرْكِ وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ.

“अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजूबिका मिनशशकि वशशिकि वशिशकाकि वन्निफ़ाकि वसूइल अख़्लाकि वसूइल मन्ज़रि

वल् मुक्लाबि फ़िल् मालि वल् अहलि वल् वल्दि”।

29 जब मीज़ाबे रहमत के सामने आये तो यह दुआ कर सकते हैं-

اَللّٰهُمَّ اِظْلِمْنِيْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِيَ اِلَّا وَجْهَكَ وَاسْقِنِيْ مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ شَرْبَةً هَنِيئَةً مُّرِّيَّةً لَا تَطْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا.

“अल्लाहुम्मा अज़िल्लनी तहत ज़िल्लि अरशिका यौमा ला ज़िल्ला इल्ला ज़िल्लु अरशिका वला बाकिया इल्ला वज्हाका वस्किनी मिन हौज़ि नबीयिका सय्यिदना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम शरबतन हनीअतन मुरअय्यतन ला नज़मओ बअदहा अबदा”।

● (ऐ अल्लाह! मुझे अपने साये अर्श के नीचे उस दिन जगह दे दे कि वहाँ सिवाय तेरे अर्श के और कहीं साया न होगा और सिवाय तेरी ज़ात के और कोई बाकी न रहेगा और मुझे अपने प्यारे यानी

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हौज़े कौसर से खुशगवार और खुशज़ायका शरबत के घूंट पीने को नसीब फ़रमा कि (जिस के पीने के बाद) फिर कभी प्यास न लगे”।

30 फिर आखिरी शौत (चक्कर) में इस्तिताम कर के ख़त्म करे।

31 फिर दो रकअत नमाज़ वाजिब मक़ामे इब्राहीम के पास पढ़े:-

32 फिर यह दुआ कर सकते हैं।

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَعَلَانِيَتِيْ فَاقْبَلْ مَعْدِرَتِيْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِيْ فَاعْطِنِيْ سُوْلِيْ وَتَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ فَاعْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَيِّنُ اِيْمَانِيْ وَيَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهُ لَا يُصَيِّبُنِيْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِيْ وَرِضًا مِنْكَ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ اَنْتَ وَلِيْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوْفِئِيْ مُسْلِمًا وَالْحَقِّقْنِيْ بِالصَّالِحِيْنَ.

“अल्लाहुम्मा इन्नका तअलमु सिर्री वअलानियति फअक्बलु मअज़िरती वतअलमु हाजति फअतिनी सूअली वतअलमु माफ़ी नफ़सी फ़ग़िरली ज़न्बी अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका ईमानन युबाशिरु कल्बी वयकीनन सादिकन हत्ता अअलमु अन्नहु ला युसीबुनी इल्ला मा कतबता ली वरिज़न मिन्का बिमा कसमता ली अन्ता वलिय्यी फ़िद्दुनिया वलआख़िरति तवफ़फ़नी मुस्लिमन वअलहिन्नी बिस्सालिहीन”।

● (ऐ अल्लाह! बेशक तू मेरी छिपी और खुली हुई बातों को बख़ूबी जानता है बस मेरी मअरिफ़त कुबूल फ़रमा और तू मेरी हाजत को जानता है बस जो मेरा सवाल है वह पूरा कर दे इलाही! तू ख़ूब जानता है जो (ऐब) मेरे नफ़्स में हैं बस मेरी ख़ता से दरगुज़र फ़रमा। ऐ मेरे रब! मैं तुझ से ऐसा ईमान माँगता हूँ जो मेरे कल्ब में पेवस्त हो जाये और ऐसा सच्चा यकीन कि मुझे नसीब हो जाये तहकीक़ जो (अच्छी या बुरी बात) मुझे पेश आये वह मेरे लिए पहले से मुक़द्दर थी और जो तूने मेरे नसीब में लिख दिया है उस पर अपनी तरफ़ से मुझे रज़ा कामिल अता

“इन्नस्सफ़ा वल् मरवता मिन शआरिल्लाहि”।

(बेशक सफ़ा और मरवह अल्लाह की निशानियों में से हैं।)

36 फिर सफ़ा पर बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के दोनों हाथ दुआ की तरह उठाये और सअी की नियत इस तरह करे (इसलिए कि सअी वाजिब है।)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیدُ اَنْ اَسْعٰی بَیْنَ الصَّفَا
وَالْمَرْوَةِ سَبْعَةَ اَشْوَاطٍ لِوَجْهِكَ
الْكَرِیْمِ فَيَبْرِکَ لِیْ وَتَقْبَلَ مِنِّیْ۔

“अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदु अन अस्आ बैनस्सफ़ा वल् मरवति सबअता अश्वातिन लिवजहिकल् करीम फ़यस्सिरहु ली वतकब्बलहु मिन्नी”।

● (“ऐ अल्लाह! मैं सफ़ा और मरवह के दर्मियान सात चक्करोँ की सअी करता हूँ। सिर्फ़ तेरी ज़ात के लिये उस को मेरे लिये आसान कर दे और मुझ से कुबूल फ़रमा”।)

फ़रमा दे कि तू ही दुनिया व आख़िरत में मेरा कारसाज़ है। ऐ अल्लाह! मुझे हालते इस्लाम पर मौत दे और अपने नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा।)

33 फिर ज़मज़म का पानी पी कर यह दुआ करे-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا
وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ (दारकतनी-237)

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका इल्मन नाफ़िअन वरिज़्कन वासिअन वशिफ़ाअम्मिन कुल्ली दाअिन”।

● (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ नफ़ा पहुँचाने वाले इल्म का और “मेरी रोज़ी में कुशादगी मरहूमत फ़रमा और हर बीमारी से शिफ़ा अता फ़रमा”।)

34 इस के बाद अगर उमरह कर रहे हों तो सअी भी करनी होगी इसलिए सफ़ा की तरफ़ जाए।

35 फिर सफ़ा पर जाकर यह पढ़े-

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ
(सूर: बकर:-158)

37 और इस के बाद तीन बार ‘हम्द व सना’ तक्बीर व तहलील बुलन्द आवाज़ से इस तरह कहे-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ۔ اَللّٰهُ اَكْبَرُ۔ اَللّٰهُ اَكْبَرُ۔ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

“अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल् हम्द”।

38 फिर यह दुआ करे-

رَبِّ اغْفِرْ وَاَرْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَتَعْلَمُ
مَا لَا نَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ۔

(सुनन बैहकी-5/95)

“रब्बिग़फ़िर वरहम वतजावज अम्मा तअलमु वतअलमु वतअलमु माला नअलमु इन्नका अन्तल् अअज़्जल् अकरम”

(मेरे रब! मुझे बख़्श दे और मुझ पर मेहरबानी फ़रमा और उन तमाम ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा जिन को तू जानता है बेशक तू वह सब कुछ जानता है जो हम नहीं जानते, बेशक तू ही मअबूद है बेहद इज़्ज़त वाला है बेहद बुजुर्गी वाला। (सुनन बैहकी-5/95)

इसी तरह कोई भी दुरूद या चौथा कलिमा पढ़ता रहे।)

- 39) फिर दुरूद शरीफ पढ़े और जो चाहे दुआ करे और दर्मियान में यह दुआ करता रहे-

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ الْأَعَزُّ وَالْأَكْرَمُ

(मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा-15562)

रब्बिग़फ़िर वरहम वअन्तल अअज़्ज़ुल् अकरम।

(ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ फ़रमा और रहम फ़रमा और तू ही मअ़बूद है बेहद इज़्ज़त वाला और बेहद बुजुर्गी वाला।)

- 40) सज़ी करने के वक़्त इज्तिबाअ हरगिज़ न करे और मर्द मीलैन अख़्ज़रैन के दर्मियान तेज़ चलें और औरतें न दौड़ें। (सुनन कुब्रा लिलबैहकी)

- 41) इस तरह मरवह पहाड़ पर सात चक्कर पूरे हो जाएँगे अब मस्जिदे हराम में जहाँ बसहूलत जगह मिले दो रकअत नफ़ल नमाज़ पढ़े और दुआ करे।

तो उर्दू या अपनी ज़बान में ही कोई भी ख़ैर की दुआ माँग सकते हैं लेकिन आहिस्ता और समझ के दुआ करना ज़्यादा बेहतर है। इस तरह आप का उमरह मुकम्मल हो गया। अब जब तक क़याम हो कोशिश करें कि सभी नमाज़ें कअ़बः के सामने पढ़ने का एहतिमाम हो। इसलिए कि कअ़बः को देखना ही एक अहम यहाँ की नफ़ली अ़िबादत है।



- 42) फिर मर्द सर के बाल मुँडवाए या कटवाएँ।
(सुनन अबूदाऊद-1985)

औरतें सर के बाल एक उंगली की पोर के बराबर कटवाए लेकिन किसी ग़ैर महरम के हाथ से न कटवाए।

इस तरह अब उमरह मुकम्मल हो गया। अगर सहूलत हो तो दो रकअत नफ़ल मुस्तहब यानी बेहतर है पढ़ना चाहे तो पढ़ ले यानी दो रकअत नमाज़ हरम में आकर पढ़ना मुस्तहब है, जिसका ज़िक्र इब्ने माजा अल् मनासिक बाबुरक अतैन बादलतवाफ़ 2958 और अहमद 6/399-27783-27786 में है। अब तमाम हलाल चीज़ें जो एहराम की वजह से मना थीं जायज़ हो जाएँगी। (बुखारी-1795)

अब और जितने भी दिन मक्का में क़याम हो पाँचों नमाज़ों को कअ़बः के सामने पढ़ने का एहतिमाम करे और जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके तवाफ़ और दुआ का एहतिमाम करे।

नोट- ऊपर दी गई दुआएँ अगर अरबी में याद न हों

भाग-3

हज़ और उमरह में फ़र्क़

हज और उमरह में फर्क

- 1 उमरह छोटे हज को कहते हैं।
- 2 हज फर्ज है, उमरह फर्ज नहीं। हज एक मुकर्रह वक्त पर होता है। उमरह साल में किसी वक्त भी सिवाय हज के पाँच दिनों के (9 जिल्हज्जा से 13 जिल्हज्जा तक) किया जा सकता है।
- 3 उमरह में सिर्फ़ एहराम बांधना, तवाफ़ करना, सफ़ा और मरवह के दर्मियान सज़ी करना और हजामत बनवा कर एहराम खोल देना होता है लेकिन हज में इन के अलावा उकूफ़ अरफ़ात उकूफ़ मुज्दलिफ़ा में नमाज़ों को इकट्ठा करके पढ़ना, जिसमें खुत्बः और तवाफ़े विदाअ भी शामिल हैं।
- 4 उमरह में तवाफ़ शुरू करते वक्त तल्बिया पढ़ना बंद हो जाता है और हज में 'जमरतुल् उक़बा' की रमि शुरू करते वक्त बंद होता है।

एहराम का बयान

एहराम के माने हैं बाज़ जायज़ उमूर को अपने ऊपर हराम कर लेना। हाजी जब मीकात से एहराम बांध लेता है तो उस पर कुछ पाबन्दियाँ आयद हो जाती हैं और चन्द हलाल चीज़ें भी हराम हो जाती हैं उन में से एक पाबन्दी मर्द के लिए सिला हुआ लिबास पहनने की मुमानिअत है। सिले हुए लिबास की जगह जो लिबास पहना जाता है उसे भी एहराम कहते हैं।

औरतों का एहराम

मर्द को तो सिर्फ़ दो बिना सिली चादरें पहनना चाहिए और बाकी कपड़े उतार देना चाहिए, लेकिन औरतों के लिए यह हुक्म है कि वह सिले हुए कपड़े पहने रहें। अल्बत्ता अपने सर के बालों को एक रुमाल से बाँध लें, कोई बाल नंगा न रहे, यह उन का एहराम है लिबास में खुसूसियत के साथ इस बात का

- 5 अगर उमरह फ़ासिद हो जाए या हालते जनाबत में 'तवाफ़' करे तो ख़ैरात के तौर पर एक बकरी ज़ब्द करना काफी है, लेकिन हज में काफी नहीं।
- 6 हज और उमरह किसी दूसरे की तरफ़ से किये जा सकते हैं चाहे वह ज़िन्दा हों या फ़ौत हो चुके हों।



ख़याल रखा जाए कि न तो बहुत ज़्यादा बारीक हो और न ही चुस्त, सादह और ढीले- ढाले कपड़े पहने।

चेहरे को खुला रखे, अगर पर्दा करना हो तो इस तरह कपड़ा लट्काएँ कि कपड़ा चेहरे को न लगे, जुराब और ज़ेवर पहन सकती हैं, दस्ताने पहनने जायज़ हैं मगर न पहनना बेहतर है। अगर एहराम के वक्त औरत को हैज़ आ जाए तो वह गुस्ल करे और एहराम बाँध ले और हर वह अमल करे जो दूसरे हाजी करते हैं। अल्बत्ता तवाफ़ उस वक्त तक न करे जब तक वह पाक न हो जाए। यही हुक्म रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी ज़ौजे मुतह्हरा हज़रत आईशा सिद्दीका (रज़ि०) को दिया था।

मीकात-

मीकात उन मक़ामात को कहते हैं, जहाँ से मक्का शरीफ़ में जाने के वास्ते एहराम बांधते हैं। (हिन्दुस्तान से बज़रिये हवाई जहाज़ सफ़र की सूरत में सवार होते वक्त एहराम बांध लें और दो रकअत

नफ़ल हाजत पढ़ लें, लेकिन नियत न करें इसलिए कि मीकात (यलमूलम) रास्ते में पड़ता है नियत तो वहाँ से होनी चाहिए, लेकिन कभी-कभी मालूम नहीं हो पाता इसलिए कुछ दूर जहाज़ जाने के बाद सिर्फ़ उमरह की नियत कर लें और बहरी जहाज़ से जाने वाले जद्दह से तक्रीबन 45 मील पहले ही 'यलमूलम' के मक़ाम पर जहाज़ ही में एहराम बांध लें या पहले बाँध लें उस वक़्त यह सिर्फ़ उमरह के लिए एहराम होगा।

एहराम पहनने का तरीका-

जब एहराम पहनने का इरादा करें तो पहले गुस्ल करे और एहराम के लिए दो सफ़ेद चादरें होना सुन्नत है। एक का तहबन्द बना ले और दूसरी को चादर की तरह ऊपर ओढ़ ले, कंधे नंगे न रखे सर्दी के वक़्त कम्बल भी कंधे से ओढ़ा जा सकता है।

एहराम पहनने के बाद दो रकअत नफ़ल पढ़ें पहली रकअत में अल्हम्दुलिल्लाहि के बाद "कुल या अय्युहल् काफ़िरून" और दूसरी में "कुल्लहुवल्लाहु पढ़ना अफ़ज़ल

है उस के बाद उमरह की नियत की जाएगी, मगर हिन्दुस्तानी लोग जहाज़ में बैठकर थोड़ी दूर जाने के बाद नियत करें। उमरह करने के बाद एहराम खोल दिया जाता है।

अगर हज्जे बदल करना हो तो बेहतर यही है कि हज की भी नियत उमरह के साथ करें, इस सूरत में उमरह के बाद हज तक एहराम नहीं खोला जाएगा, जो एक मुश्किल काम है। अगर हज में कई दिन बाकी हों तो ऐसी सूरत में हिन्दुस्तानियों के लिए बेहतर है कि सिर्फ़ उमरह की नियत करें और उमरह करने के बाद एहराम खोल दें।

एहराम में जो चीज़ें मना हैं

एहराम बाँधने के बाद चन्द चीज़ें हराम और मन्मूअ हो जाती हैं।

- ① जिन कामों से अल्लाह ने रोका है, उन से दूर रहें यानी बुरी और बेहयाई की बातों से, ग़ाली ग़लौज, जंग व जिदाल से और किसी को

किसी भी तरह तक्लीफ़ पहुँचाने से।

- ② खाने-पीने की चीज़ों में खुशबू न इस्तिमाल करे।
- ③ औरतों को शादी का पैग़ाम न दें, न अपने या किसी दूसरे के अक्द निकाह का सबब बने और जब तक एहराम में हो शहवत के साथ औरत से न बात करे और न हमबिस्तरी करे।
- ④ जिमाअ करना, बोसा लेना और बेहयाई की बातें करना या मोबाइल व टी०वी० में देखना मना है।
- ⑤ अल्लाह की नाफ़रमानी करना मना है।
- ⑥ कल्ल, झगड़ा, लड़ाई मना है।
- ⑦ नाखून और बाल कटवाना, सुर्मा और मुँह ढ़ापना मना है।
- ⑧ सिले कपड़े जैसे कुर्ता, पैजामा, पगड़ी, टोपी, मोज़ह, बनियान, नेकर वग़ैरह पहनना मना है।
- ⑨ ऐसा जूता जिससे पैर के ऊपर की हड्डी ढक जाए मना है। अलबत्ता पैर की उंगलियाँ और एड़ी ढ़ापने में कोई हर्ज नहीं।

- ⑩ जुएँ मारना या जुएँ मारने के लिए कपड़े धूप में फैलाना मना है।

- ⑪ खुशकी का शिकार करना या दूसरों को शिकार करने की तर्गीब देना भी मना है।

एहराम में जायज़ काम

बाज़ चीज़ें एहराम बाँधने के बाद भी जायज़ रहती हैं। जैसे- मर्दों के लिए तकिया पर सर रखना, कपड़ों की गठरी या सन्दूक पर सर रखना, सर और दाढ़ी बिना खुशबू के साबुन से धोना, गुस्ल करना मगर मैल कुचैल दूर न करना, न गर्म पानी और ठंडे पानी से गर्मी या ठंडक पहुँचाने की नियत से गुस्ल करना। कमरबन्द पेटी या अँगूठी पहनना, सादा सुर्मा लगाना, सर खुजलाना बशर्ते कि बाल टूटने या नाखून गिरने का ख़ौफ़ न हो, कलाई पर घड़ी बाँधना ऐनक लगाना। मस्तुई दाँत लगाना, टीका लगाना, दाँत निकलवाना, ज़ख़्म पर पट्टी बाँधना, गले में या कंधे पर थैला लट्काना वग़ैरह यह तमाम उमूर

हालते एहराम में जायज़ हैं।

इसी तरह मकान में दाखिल हो सकते हैं, साये में बैठ सकते हैं, छतरी को साया बना सकते हैं मूजी जानवर जैसे खट्मल साँप और बिच्छू वगैरह मार सकते हैं, पालतू जानवर ज़ब्त कर सकते हैं और उन का गोश्त भी खा सकते हैं।

एहराम धोया और उस का पानी कहीं भी फेंका जा सकता है और बवक़्त ज़रूरत तब्दील भी किया जा सकता है। रंगदार एहराम भी बांधा जा सकता है लेकिन सफ़ेद अफ़ज़ल है।

उमरह का बयान

उमरह को छोटा हज़ भी कहते हैं। इस में सिर्फ़ एहराम, तवाफ़े कअ़बः और सफ़ा व मरवह की सअ़ी करनी होती है।

उमरह के लिए कोई ख़ास वक़्त मुकर्रर नहीं है पूरे साल में कभी भी 8 ज़िल्हिज्ज से 13 ज़िल्हिज्ज के अ़लावह पूरे साल में कभी भी किया जा सकता है।

के नज़्दीक 'ज़ुलहुलैफ़ा' से अफ़ज़ल है जो मक्का मुकर्रमा से लगभग 12 मील दूर है और 'बड़ा उमरह' के नाम से मशहूर है और यहाँ से सय्यदुल अनाम (सल्ल०) ने खुद एहराम बांधा था जिस वक़्त कि वह मदीना मुनव्वरह से मक्का मुकर्रमा पहुँचे थे। नोट- दूसरों के लिए नफ़ली उमरह करना भी जायज़ है।

उमरह में ज़रूरी बातें

उमरह अदा करते वक़्त इन बातों का ख़याल रखना सुन्नत है।

- ① सब से पहले उमरह की नियत करना।
- ② फिर कअ़बः जाकर तवाफ़ की नियत करना।
- ③ तवाफ़ के सात चक्कर लगाने के बाद मक़ामे मुल्लज़िम पर दुआ माँगना।
- ④ दुआ के बाद मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअ़त नमाज़ वाजिब अदा करना।
- ⑤ ज़मज़म का पानी पीना।

हन्फ़ी मस्लक में उमरह ज़िन्दगी में एक बार सुन्नते मुअक्किदह है और इमाम शाफ़ई (रह०) के नज़्दीक एक बार फ़र्ज़ है।

- हज़ के दिनों में जो उमरह किया जाता है उस में हज़ भी शामिल होता है, इन दिनों के अ़लावह उमरह अकेले किया जाता है।
- मक्का या आस-पास के रहने वाले जब उमरह करना चाहें तो अपने मीक़ात पर उमरह की नियत से एहराम बाँधें।
- दूसरे मुल्क से जाने वाले अगर मक्का के क़याम में उमरह करना चाहें तो 'तन्ज़ीम' मक़ाम से एहराम बाँधें जो मक्का से सिर्फ़ तीन मील दूर है और यहीं से सय्यदुल अम्बिया (सल्ल०) ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा को एहराम बाँधने का हुक्म दिया था।
इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के नज़्दीक 'तन्ज़ीम' से एहराम बांधना अफ़ज़ल है। इमाम शाफ़ई (रह०)

- ⑥ फिर सफ़ा और मरवह के दर्मियान सअ़ी करना।
- ⑦ बाल कट्वा कर या मुंडवा कर एहराम खोल देना और गुस्ल करके अपने कपड़े पहन लेना, यह उमरह कहलाता है।

तवाफ़

“बैतुलल्लाह शरीफ़ और हतीम के इर्द-गिर्द घूमने को तवाफ़ कहते हैं” एक तवाफ़ में सात चक्कर या शौत होते हैं। इस में तवाफ़ नियत करके हज़्रे अस्वद से शुरु करके वहीं पर ख़त्म करते हैं।

तवाफ़ दो किस्म का होता है एक एहराम में दूसरा सादह कपड़ों में।

तवाफ़ की नियत-

तवाफ़ की नियत ज़रूरी है बग़ैर नियत के तवाफ़ न होगा। अगर अरबी में नियत याद न रहे तो अपनी ज़बान में यूँ कहे।

“या अल्लाह! तवाफ़ की नियत करता हूँ। इस

को मेरे लिए आसान कर दे और कुबूल फरमा”।

तवाफ़ के अरक़ान

तवाफ़ के तीन रुक़न हैं-

- ① तवाफ़ के अक्सर चक्कर पूरे करना।
- ② बैतुल्लाह के बाहर मस्जिद के अन्दर करना।
- ③ खुद से ही तवाफ़ करना चाहे किसी चीज़ पर सवार होकर ही करे मगर बेहोश इस से अलग है उस की तरफ़ से दूसरा शख्स भी कर सकता है।

तवाफ़ की शर्तें

तवाफ़ की छः शर्तें हैं तीन तो केवल हज़ के तवाफ़ों के लिए हैं और तीन सब तवाफ़ों के लिए। (1) ख़ास वक़्त में (2) तवाफ़ से पहले एहराम का होना। (3) वकूफ़े अरफ़ा का होना।

सब तरह के तवाफ़ों के लिए यह तीन शर्तें हैं-

- ① इस्लाम का होना।
- ② नियत का होना।

के तीन चक्करों में रमल ④ बाकी में न करना ⑤ सज़ी और तवाफ़ के दर्मियान इस्तिलाम करना (यह उसके लिए जो सज़ी भी करे)। ⑥ हज़्रे अस्वद के सामने खड़े होकर तक्बीर के वक़्त दोनों हाथ उठाना ⑦ हज़्रे अस्वद से तवाफ़ की शुरुआत करना (कुछ उलमा के यहाँ वाजिब और कुछ के यहाँ सुन्नत हैं)। ⑧ शुरु तवाफ़ में हज़्रे अस्वद की तरफ़ मुँह करना ⑨ तमाम चक्कर लगातार करना ⑩ जिस्म और कपड़ों का नजासत से پاک होना।

तवाफ़ के मुस्तह़बात

① तवाफ़ को हज़्रे अस्वद के दायीं ओर से इस तरह शुरु करना कि तवाफ़ करने वाले का पूरा जिस्म हज़्रे अस्वद के सामने से गुज़रते हुए बड़े। ② हज़्रे अस्वद पर तीन बार बोसा देना और तीन बार सर रखना। ③ तवाफ़ करते हुए दुआएँ पढ़ना। ④ मर्द को बैतुल्लाह के करीब होकर तवाफ़ करना बशर्त कि किसी को तकलीफ़ न हो। ⑤ औरत को रात में तवाफ़

③ मस्जिद के अन्दर होना।

तवाफ़ के वाजिबात

① तहारत का होना। ② सतर ढ़का होना ③ जिसे पैदल तवाफ़ की कुदरत हो पैदल तवाफ़ करना ④ दाहिनी ओर से तवाफ़ शुरु करना ⑤ हत्तीम को शामिल कर के तवाफ़ करना। ⑥ हज़्रे अस्वद से तवाफ़ की शुरुआत करना ⑦ पूरा तवाफ़ करना यानी अक्सर तवाफ़ रुक़न है और अक्सर से ज़्यादाह वाजिब।

● तवाफ़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ना बाज़ ने इस को अलग शुमार किया है।

नोट- अगर कोई वाजिब छोड़ेगा तो तवाफ़ दोहराना वाजिब होगा और अगर नहीं दोहराएगा तो उस की जज़ा वाजिब होगी जिसका ज़िक्र आगे होगा।

तवाफ़ की सुन्नतें

① हज़्रे अस्वद का इस्तिलाम ② इज्तिबाअ ③ शुरु

करना ⑥ तवाफ़ में हत्तीम को शामिल करना ⑦ अगर तवाफ़ बीच में छोड़ दिया हो तो शुरु से करना। ⑧ मुबाह गुप्तगू छोड़ देना। ⑨ जो चीज़ ख़ुजू में रुकावट डालें उस को न करना। ⑩ दुआ और ज़िक्र को आहिस्ता पढ़ना ⑪ रुक़न यमानी का इस्तिलाम करना ⑫ जो चीज़ें दिल को मशगूल करने वाली हों उन से नज़र को बचाना।

तवाफ़ में मुबाह चीज़ें

तवाफ़ में सलाम करना, छींक का जवाब देना, शरअी मस्ला बताना या पूछना, किसी ज़रूरत से कलाम करना, कुछ पीना दुआओं को छोड़ देना, अच्छा शेर पढ़ना, पाक जूते पहन कर तवाफ़ करना, उज़्र की वजह से सवार होकर तवाफ़ करना, दिल-दिल में कुर्आन पढ़ना।

तवाफ़ में हराम चीज़ें

① नापाकी या हैज़ व निफ़ास की हालत में तवाफ़

करना ② बिना उज्र के सवार होकर तवाफ करना ③ बेवजू तवाफ करना ④ तवाफ करते हुए इतीम के बीच से निकलना ⑤ तवाफ का कोई चक्कर या उस से कम छोड़ देना ⑥ हज्र अस्वद के अलावह और किसी जगह से तवाफ शुरू करना ⑦ तवाफ में बैतुल्लाह की ओर मुँह करना ⑧ मगर शुरू तवाफ में हज्र अस्वद के इस्तिकबाल के वक्त जायज़ है ⑨ तवाफ में जो चीज़ें वाजिब हैं उनमें से किसी को छोड़ देना।

तवाफ की मकरुह चीज़ें

① फुजूल बात करना। ② खरीद फ़रोख्त या उस की बात करना। ③ दुआ या कुआन बुलन्द आवाज़ से पढ़ना जिस से तवाफ करने वालों और नमाज़ियों को तश्वीश हो। ④ रमल और इज्तिबाअ को बिना उज्र के छोड़ देना। ⑤ तवाफ के फेरों में ज़्यादा फ़ासला करना। ⑥ दो तवाफ इस तरह इकट्ठे करना कि दो रकअत नमाज़ तवाफ बीच में न पड़े। ⑦ लेकिन अगर नमाज़ पढ़नी उस वक्त मकरुह हो तो

जायज़ है। ⑧ दोनों हाथ तवाफ की नियत के वक्त बिना तक्बीर के उठाना ⑨ खुल्बा और फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअत खड़ी हो जाने के वक्त तवाफ करना। ⑩ तवाफ के दर्मियान खाना खाना ⑪ बाज़ ने पीने को भी मकरुह कहा है ⑫ पेशाब पाखाना के तकाज़ा के बावजूद तवाफ करना ⑬ तवाफ करते हुए नमाज़ की तरह हाथ बाँधना ⑭ और किसी के कूल्हे या गर्दन पर हाथ रखना।

तवाफ की किस्में

तवाफ की सात किस्में हैं-

(1) तवाफ कुदूम- यानी आने के वक्त का तवाफ इसको 'तवाफ तहीय्या' और 'तवाफुल्लिका' भी कहते हैं यह उस 'आफ़ाकी' (बाहर से आने वाले) के लिए सुन्नत है, जो सिर्फ़ हज़ या किरान करे और तमततोअ और उमरह करने वाले के लिए सुन्नत नहीं चाहे आफ़ाकी ही क्यों न हो। इसी तरह यह अहले

मक्का वालों के लिए भी नहीं है। हाँ, अगर कोई मक्की मीकात से बाहर जाकर इफ़राद या किरान का एहराम बाँधकर हज़ करे तो उसके लिए भी मस्नून है और इस का अव्वल वक्त मक्का में दाख़िल होने का वक्त है।

(2) तवाफ़े ज़ियारत-

इस को 'तवाफ़े रुक्न' और 'तवाफ़े हज़' और 'तवाफ़े फ़र्ज़' भी कहते हैं। यह हज़ का रुक्न है बिना इस के हज़ पूरा नहीं होगा। इस का वक्त दस्वीं ज़िल्हिज्जा की सुबह सादिक से शुरू होता है और बारहवीं तक करना वाजिब है। इस में रमल होता है और सिले कपड़े, अगर एहराम के बाद पहन लिए तो इज्तिबाअ नहीं होगा और अगर एहराम के कपड़े नहीं उतारे तो फिर इज्तिबाअ करना होगा उस के बाद सज़ी भी होती है, लेकिन तवाफ़े कुदूम के बाद सज़ी कर चुका हो तो फिर रमल और सज़ी नहीं करेगा।

(3) तवाफ़े विदअ-

बैतुल्लाह से वापसी का तवाफ़ इस को तवाफ़े विदअ भी कहते हैं, यह आफ़ाकी पर वाजिब है। मक्की पर या जो ख़ारिजी मक्का को हमेशा के लिए वतन बनाये उस पर वाजिब नहीं। इस तवाफ़ में रमल व इज्तिबाअ नहीं है, न इस के बाद सज़ी, यह तीनों तवाफ़ हज़ के साथ ख़ास हैं।

(4) तवाफ़े उमरह-

यह उमरह में रुक्न और फ़र्ज़ है। इस में इज्तिबाअ और रमल करें और बाद में सज़ी भी करें।

(5) तवाफ़े नज़र-

यह नज़र मानने वाले पर वाजिब होता है।

(6) तवाफ़े तहीय्या-

यह मस्जिदे हराम में दाख़िल होने वाले के लिए मुस्तहब है, लेकिन अगर कोई दूसरा तवाफ़ कर लिया तो वह उस के कायम मक़ाम हो जाएगा।

(7) तवाफ़े नफ़ल-

यह जब जी चाहे कर सकता है।

नोट- तवाफ़ के वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कोई खास दुआ साबित नहीं। तवाफ़ करते वक़्त तल्बिया न कहे, अगर कोई दुआ याद हो तो पढ़े वरना जो ज़िक्र चाहे करता रहे। रुकन यमानी के और हज़रे अस्वद के दर्मियान रब्बना आतिना..... पढ़ना रसूलुल्लाह (सल्ल०) से साबित है और तवाफ़ के वक़्त यह दुआ भी साबित है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الرَّاحَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ
عِنْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ الْحِسَابِ

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकराहता इन्दल् मौति
वल्अप्व इन्दल् मौति वल्अप्वा इन्दल् हिसाब”

इस तरह और भी कुछ दुआएँ साबित हैं, मगर कोई लाज़िमी हुक्म नहीं है।

फिर दोनों हाथ उठाये और यह दुआ पढ़ें-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ
وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ
اَللّٰهُمَّ اٰمِنًا بِكَ وَتَصَدِّقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً
بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

“बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर लाइलाहा इल्लल्लाहु
वलिल्लाहिल् हम्दु वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि
अल्लाहुम्मा ईमानन बिका वतस्दीकन बिकिताबिका
ववाफ़ान बिअहदिका वइत्तिबाअन लिसुन्नति
नबीयिका मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम”।

“ऐ अल्लाह! मैं आप के हुक्म की तअमील आप के किताब की तस्दीक और आप के अहद को पूरा करने और आप के रसूल (सल्ल०) के इत्तिबाअ के लिए इस पत्थर को छूता और चूमता हूँ”।

नफ़ली तवाफ़ का वक़्त-

नफ़ली तवाफ़ हर वक़्त होता है इस में एहराम की ज़रूरत नहीं यह मक्का मुकर्रमा के क़याम की सबसे अफ़ज़ल नफ़ली अ़िबादात है। जब भी हरम शरीफ़ जाये कअ़बः का तवाफ़ करे।

तवाफ़ करने का तरीका

मस्जिदे हराम में दाख़िल होकर सीधा हज़रे अस्वद की तरफ़ जाए और तल्बिया बंद कर के इज्तिबाअ करे यानी दाहिने बगल के नीचे से चादर निकाल कर कंधे पर डाल ले और दिल में नियत करे और ज़बान से यह पढ़ें-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِيْدُ طَوَافَ بَيْتِكَ الْحَرَامِ فَيَسِّرْهُ
لِيْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ

“ऐ अल्लाह! मैं उमरह की नियत करता हूँ तू इसे मेरे लिए आसान कर दे और मेरी तरफ़ से इसे कुबूल फ़रमा”।

● इस के बाद हाथ छोड़कर हज़रे अस्वद पर आये और दोनों हाथ हज़रे अस्वद पर रख कर मुँह को दोनों हाथों के बीच में रखकर बोसा दे, लेकिन आहिस्ता बोसा दे। अगर भीड़ हो तो सिर्फ़ दोनों हाथ हज़रे अस्वद को लगाए और हाथों को चूम ले और अगर यह भी मुम्किन न हो तो किसी लकड़ी वगैरह से हज़रे अस्वद को छुए और उस लकड़ी को बोसा दे, अगर यह भी न हो सकें तो दाहिने हाथ को हज़रे अस्वद की ओर इस तरह करे कि पुश्त हथेलियों की अपने चेहरे की तरफ़ रहे और यह नियत करे कि हज़रे अस्वद पर रखा है फिर तक्बीर व तहलील कहे और हाथ को बोसा दिये बिना छोड़ दे।

उस के बाद दाहिनी ओर यानी बैतुल्लाह के दरवाज़े की तरफ़ चले और बैतुल्लाह बाएँ मोढ़े की ओर रहे।

जब ‘रुकन यमानी’ पर पहुँचे तो उस का इस्तिलाम करे यानी दोनों हाथ या सिर्फ़ दाहिना हाथ उस को लगाए मगर बोसा न दे और उस पर पेशानी आदि न रखे फिर जब हज़रे अस्वद पर आए तो हज़रे अस्वद का

इस्तिलाम करे। जैसे- पहली बार किया था, लेकिन हाथ तक्बीर कहने की तरफ न उठाये हाथ सिर्फ पहली बार उठाये जाते हैं और हर मर्तबः सिर्फ इस्तिलाम करें।

इसी तरह सात चक्कर पूरे करे, पहले तीन चक्कर में रमल करे (अर्थात अकड़ कर चले) बाकी चार चक्करों में अपनी रफ्तार से चले। इस तरह सातवें शौत के बाद आठवीं बार फिर हज़रे अस्वद का इस्तिलाम करे। अब एक तवाफ़ पूरा हो गया।

● उस के बाद दो रकअत वाजिब तवाफ़ मक़ामे इब्राहीम के पीछे या जहाँ जगह मिले पढ़े जिसमें पहली रकअत में “कुल् या अय्युहल् काफ़िरून” और दूसरी रकअत में “कुलहुवल्लाहु अहद” पढ़े, उस के बाद जो चाहे दुआ माँगे-

- फिर ज़मज़म पर जाकर ज़मज़म पिये और दुआ माँगे।
- फिर वहाँ से आकर हज़रे अस्वद और बैतुल्लाह के दरवाज़े के दर्मियान की दीवार (मुत्तज़िम) से

की हम्द व सना करे और तक्बीर भी बुलन्द आवाज़ से तीन बार कहे-

“अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल् हम्द” और लगभग पच्चीस आयत पढ़ने के बराबर ठहरे फिर अपनी रफ्तार में ज़िक्र व दुआ माँगते हुए मरवह की तरफ चले और सफ़ा व मरवह के दर्मियान यह दुआ पढ़े-

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ

“रब्बिग़फ़िर वरहम अन्तल्अअज़ुल्अकरम”

“ऐ अल्लाह! बख़्श दे आप ही सब से ज़्यादाह इज़्ज़त वाले और सबसे बुरज़ुग हैं”।

- इसके अलावा जो चाहे पढ़े और जब हरी लाइट की जगह आ जाए तो तेज़ चले, मगर दर्मियानी चाल चले। जब दोनों हरी लाइट से निकल जाये तो फिर अपनी चाल से चलने लगे यहाँ तक कि मरवह पर पहुँचे और थोड़ी देर रुक जाये और दाहिनी ओर

लिपट कर दुआ करे।

● फिर जिस तवाफ़ के बाद सज़ी हो तो तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर हज़रे अस्वद का इस्तिलाम करे और यह अब नवां इस्तिलाम होगा जो मुस्तहब है। इस्तिलाम करके बाबुस्सफ़ा से मस्जिद से बाहर निकले और सफ़ा पर जाए और यह दुआ पढ़े-

أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ

“अब्दु बिमा बदाअल्लाहु बिही इन्नस्सफ़ा वल् मरवता मिन शअ़ाइरिल्लाह”

“जिससे अल्लाह ने इब्तिदा की मैं उसी से शुरु करता हूँ” बेशक सफ़ा व मरवह अल्लाह की निशानियों में से है।

- फिर सफ़ा पर चढ़े, फिर बैतुल्लाह की तरफ मुँह करके खड़ा हो और बैतुल्लाह पर नज़र रखते हुए दोनों हाथ आसमान की तरफ मोड़ों तक उठाये जैसे दुआ में उठाते हैं। उस के बाद तीन बार अल्लाह

को मायल होकर बैतुल्लाह की ओर मुँह करके खड़ा हो और फिर जिस तरह सफ़ा पर ज़िक्र और दुआ की थी यहाँ भी करे। यह सफ़ा से मरवह तक एक चक्कर हो गया।

● उस के बाद मरवह से उतरकर फिर सफ़ा की तरफ चले और दूसरी तरफ भी दोनों मीलों (हरी लाइट) के दर्मियान दौड़ कर चले और सफ़ा पर चढ़कर फिर उसी तरह दुआ और ज़िक्र करे, जैसे शुरु में किया था, यह मरवह से सफ़ा तक दो फेरे हुए।

● इसी तरह सात फेरे करे फिर सज़ी के सात फेरे पूरे करने के बाद दो रकअत नफ़ल नमाज़ मस्जिदे ह़राम में चाहे तो पढ़े।

नोट- सज़ी हमारे यहाँ वाजिब है, तवाफ़ के तुरन्त बाद करना सुन्नत है तुरन्त करना वाजिब नहीं, मगर बिना उज़्र के मकरुह है।

सज़ी का रुक्न

सज़ी में सफ़ा व मरवह के दर्मियान चलना रुक्न

है, अगर इन दोनों के दर्मियान सज़ी नहीं की, बल्कि इधर-उधर की तो सज़ी न होगी।

सज़ी की शर्तें

सज़ी की छः शर्तें हैं-

- ① खुद सज़ी करना चाहे किसी चीज़ पर चढ़कर करे, सज़ी की नियाबत जायज़ नहीं, मगर यह कि एहराम से पहले कोई शख्स बेहोश हो गया हो तो उस की ओर से दूसरा शख्स सज़ी कर सकता है, बशर्ते कि सज़ी के वक़्त तक होश न आया हो।
- ② दूसरी शर्त यह है कि सज़ी पूरा तवाफ़ या अक्सर तवाफ़ करने के बाद हो, चाहे तवाफ़ नफ़्त ही हो और चाहे तवाफ़ बहालत पाकी किया गया हो या नापाकी, अगर कोई तवाफ़ से पहले या चार फेरे करने से पहली सज़ी करेगा तो सज़ी न होगी और अगर तवाफ़ के चार फेरे करने के बाद करेगा तो सही हो जाएगी।

सात चक्कर उस फेरे के अलावा करने होंगे जो मरवह से शुरू किया था।

- ⑤ पाँचवीं शर्त अक्सर हिस्सा सज़ी का करना, अगर अक्सर नहीं किया तो सज़ी न होगी।
- ⑥ छठी शर्त सज़ी के वक़्त में सज़ी करना यह हज़ के सज़ी की शर्त है। उमरह के सज़ी की शर्त नहीं, लेकिन कारिन या मुतमत्तेअ उमरह करे तो उस के उमरह की सज़ी के लिए भी यह वक़्त शर्त है और हज़ की सज़ी का वक़्त हज़ के महीनों से शुरू हो जाना है। हज़ के महीनों के अन्दर सज़ी करना शर्त नहीं, मगर सज़ी को हज़ के महीनों से ताख़ीर करना मकरुह है।

सज़ी के वाजिबात

- ① सज़ी का ऐसे तवाफ़ के बाद होना जिसे जनाबत और हैज से पाक होने की हालत में किया हो।
- ② सज़ी सफ़ा से शुरू करना और मरवह पर ख़त्म करना।

- ③ तीसरी शर्त एहराम हज़ या उमरह की सज़ी से पहले करना। अगर कोई एहराम से पहले सज़ी करेगा तो सही न होगी चाहे तवाफ़ के बाद हो और एहराम का बाकी रहना सज़ी तक ज़रूरी नहीं बल्कि इस में इस सज़ी की तफ़्सील है कि अगर हज़ की सज़ी करता है और उकूफ़े अरफ़ा से पहले करता है तो एहराम का होना सज़ी के वक़्त शर्त है और अगर उकूफ़ के बाद सज़ी करता है तो एहराम का बाकी रहना शर्त नहीं बल्कि एहराम का न होना मस्नून है और अगर सज़ी उमरह की है तो एहराम का रहना शर्त नहीं, मगर वाजिब है। अगर तवाफ़ के बाद सर मुँडा के सज़ी करे तो दम वाजिब होगा और सज़ी सही हो जाएगी।
- ④ चौथी शर्त सफ़ा से शुरू करना और मरवह पर ख़त्म करना है। अगर मरवह से किसी ने शुरू किया तो यह फेरा शुमार न होगा बल्कि सफ़ा से लौट कर आएगा तो सज़ी शुरू होगी और

- ③ पैदल सज़ी करना अगर कोई उज़्र न हो, अगर बिना उज़्र के कोई शख्स सवार होकर सज़ी करेगा तो दम वाजिब होगा।
- ④ सात फेरे पूरे करना यानी चार फेरे तो फ़र्ज़ हैं और उस के बाद तीन फेरे वाजिब। अगर किसी ने तीन फेरे छोड़ दिये तो सज़ी हो जाएगी, लेकिन हर फेरे के बदले में आधा साअ गेहूँ या उस की कीमत सद्क़-ए-फ़ित्र के बराबर सद्क़ देना वाजिब होगा।
- ⑤ उमरह की सज़ी में उमरः का एहराम आख़िर सज़ी तक बाकी रहना।
- ⑥ सफ़ा और मरवह के दर्मियान पूरी मुसाफ़त तय करना।

सज़ी की सुन्नतें

- ① हज़्रे अस्वद का इस्तिलाम करके सज़ी के लिए मस्जिद से निकलना।
- ② तवाफ़ के बाद तुरन्त सज़ी करना।
- ③ सफ़ा और मरवह पर चढ़ना।

- ④ सफ़ा और मरवह पर चढ़कर किब्ला-रु-होना।
- ⑤ सज़ी के फेरों को लगातार करना।
- ⑥ जनाबत और हैज़ से पाक होना।
- ⑦ सज़ी ऐसी हालत में हो कि कपड़े बदल और तवाफ़ की जगह पर कोई निजासत न हो या वुजू भी किया हो।
- ⑧ मीलैन अख़जरैन के दर्मियान तेज़ चलना।
- ⑨ सतर औरत (जिस्म ढका) का होना।

सज़ी के मुस्तह़बात

- ① नियत करना।
- ② सफ़ा और मरवह पर देर तक ठहरना।
- ③ खुशूअ़ खुजूअ़ से ज़िक्र और दुआएँ तीन-तीन बार पढ़ना।
- ④ सज़ी के फेरों में अगर बिना उज़्र के ज़्यादा फ़ासला हो जाये या किसी फेरे में कुछ वक्फ़ा हो जाए तो नये सिरे से कर ले कि सज़ी को शुरू से करना उस वक़्त मुस्तह़ब है, जबकि अक्सर फेरे न हुए हों।

से ज़्यादाह कटवाना दुरुस्त नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं का तर्जुमः

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अरफ़ात में यह दुआ माँगी जिसका तर्जुमः इस तरह है-

“अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह ही के लिए सब तअ़रीफ़ हैं। अल्लाह ही के लिए सब तअ़रीफ़ हैं अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। हुक्मूत और सब तअ़रीफ़ उसी के लिए हैं। ऐ अल्लाह! मुझे सीधी राह दिखा और मुझे गुनाहों से पाक कर दे और तक्वा को मज़बूती से पकड़ने वाला बना और मुझे दुनिया व आख़िरत में बख़्श दे, ऐ अल्लाह! मेरे इस हज़ को मक़बूल फ़रमा और गुनाह को बख़्शा हुआ बना दे।

➤ ऐ अल्लाह! मेरी नमाज़, मेरी अ़िबादत व कुर्बानी, मेरी ज़िन्दगी और मौत तेरे ही लिए है और

- ⑤ सज़ी के बाद मस्जिद में आकर दो रकअ़त नफ़ल पढ़ना, मरवह पर इन नफ़लों को पढ़ना मकरुह है।

मकरुहात सज़ी

ख़रीद व फ़रोख़्त और ऐसी बातचीत जो मशगूल कर दे, सज़ी के फेरे लगातार न करना और सफ़ा व मरवह पर न चढ़ना, सज़ी को बिना उज़्र के ताख़ीर करना या अय्यामे नहर से मुख़्ख़र करना, सतर खोलना, फेरों में बहुत फ़ासला करना।

बाल कटवाना और एहराम खोलना

सफ़ा और मरवह की सज़ी के बाद आप बाल मुंडवा लें या कटवा लें चौथाई सर का हलक़ या बाल छोटे करवाना वाजिब है, उस के बाद अगर हो सके तो दो नफ़ल पढ़ ले या नहा धो कर मामूल के मुताबिक़ कपड़े पहन ले यह उमरह मुकम्मल हो गया।

औरत को बाल मुंडवाना जायज़ नहीं है उसे उंगली के पोर के बराबर बाल कटवाने चाहिए, इस

आख़िरकार मेरा ठिकाना भी तेरी ही तरफ़ है, ऐ अल्लाह! क़ब्र के अज़ाब से, दिल के वस्वसों से और मामलात की परेशानी से तेरी पनाह चाहता हूँ।
➤ ऐ अल्लाह! हिदायत के साथ हमारी रहनुमाई फ़रमा और हमें परहेज़गारी के साथ आरास्ता कर और हमें दुनिया व आख़िरत में बख़्श दे ऐ अल्लाह! तूने मुझे दुआ करने का हुक्म फ़रमाया है और कुबूल करना तेरे अख़्तियार में है और तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

➤ ऐ अल्लाह! तू जिस भलाई को अच्छा समझता है उस को हमारे लिए मइबूब बना और उस को हमारे लिए आसान कर दे और जिस बुराई को तू मकरुह समझता है उस को हमारे लिए काबिले नफ़रत बना दे और हमें उस से दूर रख, और हिदायत देने के बाद हम से इस्लाम न छीन, और उस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं। उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तअ़रीफ़ है वही ज़िन्दा करता और मारता

है और वह हर चीज़ पर कादिर है।

➤ ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे और मेरे मामलात को आसान कर दे और मैं सीने के वस्वसों से मामलात की खराबी और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ उस चीज़ के शर से जो रात में दाख़िल होती है, और उस चीज़ के शर से जो दिन में दाख़िल होती है, और उस चीज़ के शर से जिस को हवाएँ उड़ाती हैं और ज़माने के हवादिस के शर से, ऐ अल्लाह हमें दुनिया और आख़िरत में भलाई अता कर और आग के अज़ाब से बचा।

➤ ऐ अल्लाह! मैं तुझ से भलाई चाहता हूँ जो तुझ से मेरे नबी (सल्ल०) ने मांगी है। ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने अपने ऊपर जुल्म किया। अगर तू हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो हम ख़सारा उठाने वाले होंगे।

➤ ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे नमाज़ कायम करने वाला बना दे और मेरी औलाद को भी ऐ मेरे

परवरदिगार हमारी दुआ कुबूल फ़रमा, ऐ हमारे रब बख़्श दे मुझे और मेरे माँ बाप और मोमिनों को जिस दिन क़ियामत कायम होगी।

➤ ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे वालिदैन पर रहम फ़रमा जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला है। ऐ हमारे परवरदिगार! हमें बख़्श दे और हमारे उन भाईयों को भी बख़्श दे जो हम से पहले ईमान के साथ गुज़र चुके हैं और ईमान वालों के मुतअल्लिक हमारे दिल में कीना न डाल।

➤ ऐ हमारे परवरदिगार! बेशक तू मेहरबान, रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब! बेशक तू सुनने और जानने वाला है और तौब: कुबूल करके हम पर रुजूअ कर, बेशक तू तौब: कुबूल करने वाला और बड़ा मेहरबान है। नहीं है ताक़त नेकी की और न गुनाह से बचने की सिवाय अल्लाह तआला की मदद के जो बुलन्द शान और अज़मत वाला है।

➤ ऐ अल्लाह! बेशक तू जानता है और मेरी क़यामगाह को देखता है, और मेरे कलाम को सुनता

है, और मेरे ज़ाहिर और बातिन को जानता है, और मेरे कामों में से कोई चीज़ भी तुझ से पोशीदा नहीं है, और मैं निहायत मुफ़्लिस फ़रियाद करने वाला एक फ़कीर हूँ। मैं पनाह चाहने वाला डरने वाला, अपने गुनाहों का एतिराफ़ करने वाला और इकरार करने वाला हूँ।

मैं तुझ से मिस्कीन फ़कीर की तरह सवाल करता हूँ और एक ज़लील गुनाहगार की तरह तेरे सामने पुकारता हूँ और तुझ से दुआ माँगता हूँ एक डरने वाले अंधे की तरह जिसकी गर्दन तेरे लिए झुकी हुई हो और उसकी आँखें आँसू बहाती हों और जिस का जिस्म तेरी याद में लाग़र हो गया हो, और उस की नाक तेरे लिए ख़ाक़ आलूद हो गई हो।

➤ ऐ अल्लाह! मुझे अपने सामने दुआ माँगने से बद्नसीब न करना और तू मेरे हक़ में मेहरबान रहम करने वाला बन जा। और ऐ सब बख़्शिश करने वालों से बेहतर, ऐ रहम करने वालों से बेहतर, ऐ

रहम करने वालों में सब से बढ़कर रहम करने वाले, और सब तअरीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का पालने वाला है। (इलाही कुबूल फ़रमा)

तवाफ़े विदाअ-

हज़ या उमरा से फ़ारिग़ होकर जब वापसी के सफ़र का इरादह हो तो तवाफ़े विदाअ इस तरह करे कि उस में रमल न करे और उस के बाद सज़ी भी न करे। तवाफ़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े और क़िल्बा रुख़ खड़ा होकर ख़ूब पेट भर आबे ज़मज़म पिये। फिर बैतुल्लाह के दरवाज़े के पास जाकर उस से लिपटे, सीना और दाहिना रुख़सार मुल्लज़िम को लगाकर दाहिना हाथ ऊपर को उठा कर बैतुल्लाह का दरवाज़ा पकड़े जैसा कि कोई गुलाम और ख़ादिम अपने आका का दामन पकड़ता है और ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ करे फिर हज़्रे अस्वद का इस्तिलाम करे और बैतुल्लाह की तरफ़ हसरत की निगाह से देखता हुआ मस्जिद से बाहर निकले, अगर यह सब

किसी को तक्लीफ पहुँचाए बगैर कर सकता है तो करे वरना तवाफ करके नमाज़ पढ़े और दुआ कर के वापस चला आये फिर यह दुआ पढ़े:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ اَللّٰهُمَّ
اَرْزُقْنِيْ الْعُوْدَ بَعْدَ الْعُوْدِ الْمَرَّةَ بَعْدَ الْمَرَّةِ اِلَى
بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَاَجْعَلْنِيْ مِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ عِنْدَكَ
يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ
الْعَهْدِ مِنْ بَيْتِكَ الْحَرَامِ وَاِنْ جَعَلْتَهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ
فَعُوْصِيْ عَنْهُ الْجَنَّةَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ
عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَاٰلِهِ وَصَحْبِهِ اَجْمَعِيْنَ

अल्हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फीही। अल्लाहुम्मरजुकनी अल् औदा बअदल औदि अल् मरता बअदल मरता इला बैतिकल हरामी वजअलनी मिनल् मक्बूहीन इन्दका या जल्लजिलालि वल् इकराम। अल्लाहुम्मा ला तजअलहु आखिरल्

अहदी मिन बैतिकल हराम वइन जअलतहु आखिरल अहदी फअव्विसना इन्दुल जन्नता या अरहमुरीहिमीन वसल्लाहु अला खैरि खल्लकिहि मुहम्मदिव वआलिही वसहबिही अजूमईन।

तर्जुम:- “तमाम पाक बाबरकत व इफ़राद किफ़ायत करने वाली तअरीफें सब अल्लाह तआला के लिए हैं। ऐ अल्लाह! मुझे को (हज़ से) वापसी के बाद फिर बैतुल्लाह की जानिब बार-बार आने की तौफ़ीक़ अता फरमा और ऐ जुल् जलाल वल् इकराम मुझे मक़बूल बन्दों में से बना ले। ऐ अल्लाह! तू बैतुल्लाह की उस ज़ियारत को मेरे लिए आख़िरी ज़ियारत न बना और अगर यह आख़िरी ज़ियारत है तो ऐ अरहमुरीहिमीन! तू मुझे इस के बदले जन्नत अता फरमा और रहमत कामिला नाज़िल फरमा बेहतरीन मख़्लूक मुहम्मद (सल्ल०) पर और उस की तमाम आल व औलाद पर”।



भाग-4

जिनायात

जिनायात (तावान या जुर्माना)

इस के माने ख़ता और कुसूर के हैं। मक्सद यह है कि कोई ऐसा काम करना जो हालते एहराम में मन्हूअ हो। जैसे- सिले हुए कपड़े पहनना सर और चेहरा ढांपना, नाखून काटना, बाल साफ़ करना, खूशबू इस्तेमाल करना, जिमाअ (सम्भोग) करना, खुश्की के जानवर का शिकार करना वाजिबाते हज़ में से कोई वाजिब छोड़ देना। इन में से कोई ख़ता व कुसूर हो जाए तो उस की जज़ा वाजिब है।

दम-

मनासिके हज़ अदा करने में अगर किसी किस्म की ख़ता हो जाए तो कोई जानवर ज़ब्ड़ करने को दम कहते हैं। जैसे- भेड़, बकरी या गाय और ऊँट आदि।

बुद्ना-

अगर किसी औरत ने हैज़ या निफ़ास की हालत

में तवाफ़े ज़ियारत कर लिया या किसी हाजी ने वकूफ़े अरफ़ा के बाद और बाल कटवाने से पहले जिमाअ कर लिया या किसी हाजी ने वकूफ़े अरफ़ा के बाद और बाल कटवाने से पहले जिमाअ कर लिया तो पूरा ऊँट या पूरी गाय ज़ब्द करना “बुद्ना” कहलाता है। यह बड़ा जुर्म है, इसलिए तावान भी बड़ा है।

सद्का-

छोटे मोटे कुसूर और ख़ता पर सद्का ही काफी है। यह सद्का आधा साअ गेहूँ या एक साअ जौ अदा करना पड़ता है। एक साअ साढ़े तीन सेर के बराबर होता है।

मक्का के तारीख़ी मक़ामात

1- मूलिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम-

यह वह मक़ाम है जहाँ सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत हुई। यहाँ अब सऊदी हुकूमत ने एक लाइब्रेरी कायम कर दी है। सफ़ा और

क़ब्रस्तान से आगे मिना को जाते हुए रास्ते में मक्का से तकरीबन तीन मील की दूरी पर है। उस की चोटी पर वह ग़ार है जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) एलाने नुबूव्वत से पहले एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे और यहीं आप (सल्ल०) पर पहली वस्त्र नाज़िल हुई थी इस को फ़ारान की चोटी भी कहते हैं।

4- जबले सौर-

मक्का मुकर्रमा से तकरीबन छः मील दूर यह पहाड़ी है जिस के एक ग़ार में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हिजरत के मौक़े पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के साथ क़याम फ़रमाया था।

5- मस्जिदे तुवा-

जन्नतुल मअला क़ब्रस्तान से आगे यह मस्जिद है। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उमरह अदा फ़रमाया था तो यहीं ठहरे थे।

6- मस्जिदे जिन्न-

यह मस्जिद सूके मअला में क़ब्रस्तान के करीब

मरवह से बाहर खड़े होकर पहाड़ की जानिब देखें तो एक छोटा सा मकान नज़र आएगा यही मूलिदे नबवी (सल्ल०) है।

1- जन्नतुल मअला-

यह मक्का मुकर्रमा का क़दीमी क़ब्रस्तान है। इस मुक़द्दस क़ब्रस्तान में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा (रज़ि०) हज़रत अस्मां (रज़ि०) बिनत अबी बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०)। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दादा जनाब अब्दुल मुत्तलिब और चचा जनाब अबू तालिब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) हज़रत फुज़ैल बिन अब्बास (रज़ि०)।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) कासिम (रज़ि०) बिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) की क़ब्रें हैं, इन के अलावह बेशुमार ताबिअीन और औलिया अल्लाह दफ़न हैं।

3- जबलेनूर-

इसको ‘कोहे हि़रा’ भी कहते हैं। जन्नतुल मअला

है। इस का नाम मस्जिदे बैत और मस्जिदे हि़र्स भी है यहीं नबी करीम (सल्ल०) ने जिन्नो से बैअत ली थी।

11- मस्जिदे आइशा-

यह मस्जिद ‘तनअीम’ में है जहाँ से उमरह करने वाले हाजी और मक्का के रहने वाले उमरह के लिए एहराम बाँधते हैं।



भाग-5

मदीना मुनव्वरह

और

मस्जिदे नबवी में दाखिला का तरीका

- और दूसरी में 'कुल हुवल्लाह' पढ़े।
- 6 अब सलाम के लिए जाए और सलाम पढ़े दूसरों का भी सलाम पहुँचाए।
 - 7 फिर एक हाथ दाहिनी तरफ आए और हज़रत अबू बक्र सिदीक़ को सलाम करे फिर एक हाथ आगे आए और हज़रत उमर (रज़ि०) को सलाम करे और इन हज़रत को भी दूसरों का सलाम पहुँचाए।
 - 8 फिर बाहर निकल कर क़अब: की तरफ़ मुँह कर के दुआ करे।
 - 9 फिर जन्नतुल बक़ीअ की ज़ियारत के लिए जाये मगर जुमअ के दिन सुन्नत है इसमें बेहतर यह है कि पहले हज़रत उस्मान (रज़ि०) के क़ब्र की ज़ियारत करे, फिर हज़रत इब्राहीम बिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ब्र की फिर तमाम सद्दाबा-ए-किराम के क़ब्रों की ज़ियारत करे।
 - 10 फिर मस्जिदे कुबा की ज़ियारत के लिए जाये

मदीना मुनव्वरह और मस्जिदे नबवी में दाखिला का तरीका

एक नज़र में

- 1 मदीना मुनव्वरह या फिर मस्जिदे नबवी में दाखिल से पहले गुस्ल करना मुस्तहब है वरना वुजू करे।
- 2 पहले मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की नियत करे फिर यहाँ आकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ब्र की भी ज़ियारत करे।
- 3 मस्जिद में दाखिला की दुआ पढ़े।
- 4 बाब जिब्रईल से दाखिल होना बेहतर है लेकिन यह आमतौर से बन्द रहता है।
- 5 मेम्बर और क़ब्र के दर्मियान दो रकअत नमाज़ तहीय्यतुल मस्जिद आसानी से जगह मिल जाए तो पढ़े वरना कहीं भी मस्जिद में पढ़े। जिसमें पहली रकअत में 'कुल या अय्युहल काफिरुना'

- जिसमें सनीचर को जाना मुस्तहब है। यहाँ एक उमरे का सवाब मिलता है बाकी और तारीख़ी चीज़ों की भी ज़ियारत की जा सकती है।
- 11 रियाजुल जन्नह में औरतों के जाने का वक़्त फ़ज्र बाद से 11 बजे तक, फिर जुह के बाद से साढ़े तीन बजे तक फिर अ़िशा के बाद से रात 12 बजे तक रहता है। जिस की मालूमात हासिल कर ली जाए।
 - 12 अगर बाब सिदीक़ से जाकर बैठ जाये तो रियाजुल जन्नह में जाना आसान हो जाता है।
 - 13 हमारा मामूल था कि हरम तहज्जुद के वक़्त आते और सुबह आठ बजे सलाम कर के इशराक़ पढ़कर कमरे जाते और खाना खाकर एक घंटा आराम कर के 10 बजे फिर आ जाते और साढ़े ग्यारह बजे बाब सिदीक़ से अन्दर जाते रियाजुल जन्नह में अक्सर जगह मिल जाती और फिर जुह बाद बाहर आ जाते या

आगे की सफ़ में जाकर अन्दर बैठते। फिर अम्र से पहले सलाम कर के ढाई बजे बाब सिदीक की तरफ़ से अन्दर जाकर रियाजुल जन्नह में या वहीं आसपास अम्र, मग़िब और अ़िशा पढ़ते। उसके बाद बैठकर तिलावत करते। फिर सलाम कर के वापस कमरे आ जाते।



भाग-6

मदीना मुनव्वरह का सफ़र

मदीना मुनव्वरह का सफ़र

मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरह का सफ़र तक्रीबन 450 किलोमीटर है।

हज़ से पहले या बाद में मस्जिदे नबवी की ज़ियारत मस्नून है।

सहीहैन में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मेरी इस मस्जिद में एक वक़्त की नमाज़ मस्जिदे ह़राम के अ़लावह दूसरी मस्जिदों की एक हज़ार नमाज़ से बेहतर है”।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया:- “मेरी इस मस्जिद में एक वक़्त की नमाज़ दूसरी मस्जिद की एक हज़ार नमाज़ से अफ़ज़ल है, मस्जिदे ह़राम के सिवा”। (मुस्लिम)

● हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मेरी इस मस्जिद

में एक नमाज़ दूसरी मस्जिदों की एक हज़ार नमाज़ से अफ़ज़ल है मस्जिदे ह़राम के सिवा और मस्जिदे ह़राम की एक नमाज़ दूसरी मस्जिदों की एक लाख नमाज़ से अफ़ज़ल है”। (अहमद व इब्ने माजा)

मस्जिदे नबवी के करीब-

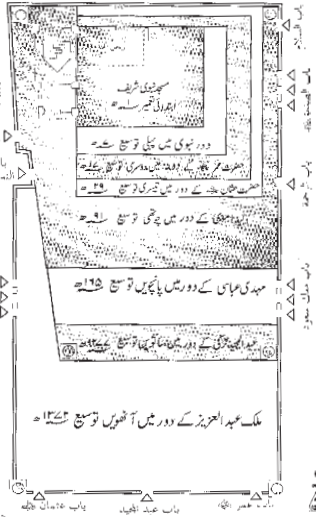
जब ज़ियारत करने वाला मस्जिदे नबवी के पास पहुँचे तो उस को चाहिए कि मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त पहले अपना दाहिना पैर दाख़िल करे और यह दुआ पढ़े:-

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ
وَأَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ، وَبِوَجْهِ الْكَرِيمِ، وَسُلْطَانِهِ
الْقَدِيمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي
أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि,
अऊज़ु बिल्लिाहिल अज़ीम वबिवज़्हिलकरीम, व

सुल्तानिहिल् कदीम, मिनशशैतानिर्नजीम,
अल्लाहुम्मफतहली अब्बाबा रहमतिक।

“अल्लाह के नाम से और दुखद सलाम हो अल्लाह के रसूल पर, अल्लाह अज़मत वाले की पनाह चाहता हूँ और उस की बुर्जुग चेहरे और कदीम सलतनत की पनाह चाहता हूँ शैतान मरदूद से, ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे”।
यह वैसे ही कहे



1395/1975 ह० तक मस्जिदे नबवी शरीफ की तौसीआत का नक्शा

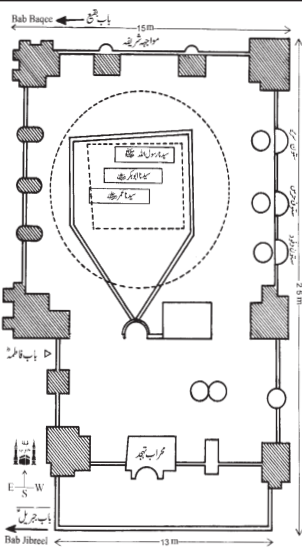
जैसे दूसरी मस्जिदों में दाखिल होते वक़्त कहता है। मस्जिदे नबवी में दाखिले की कोई मख़सूस दुआ नहीं है, फिर मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ें जिस में अल्लाह से दुनिया व आख़िरत की महबूब चीज़ें माँगे। अगर यह दोनों रकअतें रियाजुल जन्नह में पढ़ें तो अफ़ज़ल है इसलिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इश्राद है:-

“मेरे घर और मेम्बर के दर्मियान की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है”।

रौज़-ए-अक़दस पर सलाम पढ़ने का तरीका

नमाज़ के बाद निहायत अदब के साथ रौज़-ए-अतहर (सल्ल०) पर आये और दिल को तमाम दुनयावी ख़यालात से फ़ारिग़ कर के कुछ फ़ासले पर खड़ा हो जाये और क़िब्ले की तरफ़ पुश्त करके ज़रा बाएँ तरफ़ मायल हो जाये ताकि रुए

अनवर (सल्ल०) का सामना हो जाए। इधर उधर न देखें। नज़र नीचे रखे और कोई हरकत ख़िलाफ़े अदब न करे। ज़्यादा क़रीब भी खड़ा न हो और जाली को हाथ न लगाये न बोसा दे न सज्दः करे, न फ़ोटो खींचे और न वीडियो बनाये कि इस किस्म की बातें ख़िलाफ़े अदब व एहतियाराम और



जालियों के अन्दर हुज्रे शरीफ़ का नक्शा नाजायज़ हैं और सज्दः

करना शिर्क है और यह ख़याल करे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) लहद शरीफ़ में क़िब्ले की तरफ़ मुँह किये

हुए आराम फ़रमा हैं। इसलिए अज़मत व जलाल का लिहाज़ करते हुए दर्मियानी आवाज़ से सलाम पढ़ें।

नबी (सल्ल०) और आप के साहिबैन हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की क़ब्रों की ज़ियारत करें और नबी (सल्ल०) की क़ब्र के सामने अदब के साथ खड़ा हो जाये और दबी आवाज़ के साथ आप पर इस तरह सलाम करे-

“اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ”

अस्सलामु अलैका या रसूलल्लाहि

या अगर ज़ियारत करने वाला अपने सलाम में यूँ कहे तब भी कुछ हर्ज नहीं:

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا حَبِیْبَ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا خَیْرَ خَلْقِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ مِنْ جَمِیْعِ خَلْقِ اللهِ، اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا سَیِّدَ وُلْدِآدَمَ، اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیْهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ
أَنَّكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ بَلَغْتَ رِسَالَةَ وَأَدَّيْتَ
الْأَمَانَةَ وَنَصَحْتَ الْأُمَّةَ وَكَشَفْتَ الْغُمَّةَ فَجَزَاكَ
اللَّهُ، اللَّهُمَّ آتِهِ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَالْدَّرَجَةَ
الرَّفِيعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامَ الْمَحْمُودِ الَّذِي وَعَدْتَهُ
إِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْوَعْدَ

अस्सलामु अलैका या हबीबल्लाहि, अस्सलामु अलैका
या खैरी खल्किल्लाहि, अस्सलामु अलैका मिन
जमीअ खल्किल्लाहि, अस्सलामु अलैका या सय्यदि
वुलदि आदमा, अस्सलामु अलैका अय्यहुन्नबीय्यु
वरहमतुल्लाहि वबराकतहु अशहदु अल्ला इलाह
इल्लल्लहु वहदहु ला शरीकालहु वअशहदु अन्नका
या रसूलल्लाहि कद बल्लगता रिसलाता वअददयितल
अमानता वनसहतल् उम्मता वकशफतिल् गुम्मता
फजज़ाकल्लाह अल्लाहुम्मा आतिहिल वसीलता

वल्लफज़ीलता वददरजतराफीअता वबअस्तु मकाम
महमूदल्लज़ी वअदतहु इन्नका ला तुख़िलफुल मीआद।

सलाम के अल्फ़ाज़ में जितना चाहे ज़्यादाती
कर सकता है मगर सलफ़ का मामूल इख़्तिसार
(छोटे) का था और इख़्तिसार ही को बेहतर समझते
थे और अगर किसी को यह अल्फ़ाज़ पूरे याद न हों
या ज़्यादा वक़्त न हो तो जितना याद हो या कह
सकता हो कह ले कम से कम मिक्दार 'अस्सलामु
अलैकुम या रसूलल्लाह' है।

अगर किसी शख्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की
ख़िद्मत में सलाम अर्ज़ करने के लिए कहा हो तो
उस का सलाम भी अपने बाद इस तरह अर्ज़ करे।

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ جَمِيعٍ مَنْ

यहाँ उसका नाम ले जिसकी
तरफ़ से सलाम पेश करना हो

أَوْصَانِي بِالسَّلَامِ عَلَيْكَ

अस्सलामु अलैका या रसूलल्लाहि मिन
यस्तशफ़ओ बिका इला रब्बिका।

यहाँ उसका नाम ले जिसकी
तरफ़ से सलाम पेश करना हो

और अगर बहुत से लोगों ने सलाम अर्ज़ करने
को कहा हो और नाम याद न रहे तो सब की तरफ़
से इस तरह सलाम अर्ज़ करे।

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ

يَسْتَشْفَعُ بِكَ إِلَى رَبِّكَ

“अस्सलामु अलैका या रसूलल्लाहि मिन जमीअ
मन औसानी बिस्सलामि अलैका”

● सलाम पढ़ने के बाद दाहिनी तरफ़ को हट कर
हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) के चेहरे मुबारक
के सामने खड़े होकर सलाम पढ़े-

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ وَثَانِيَتَهُ

فِي الْغَارِ وَرَفِيقَهُ فِي الْأَسْفَارِ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ

جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمِّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا

“अस्सलामु अलैका या ख़लीफ़ता रसूलिल्लाहि
वसानियतहु फ़िल् ग़ारि वरफ़ीकहु फ़िल् अस्फ़ारि

अबा बकरिनिसिद्दीक जज़ाकल्लाहु अज़न उम्माति
मुहम्मदिन खैरा”।

● फिर एक हाथ दाहिनी तरफ़ को हट कर हज़रत
उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे के मुकाबिल खड़े
होकर सलाम पढ़े-

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ

الْفَارُوقَ الَّذِي أَعَزَّ اللَّهُ بِهِ إِلَّا السَّلَامَ

جَزَاكَ اللَّهُ عَنْ أُمِّةٍ مُحَمَّدٍ خَيْرًا

“अस्सलामु अलैका या अमीरुल् मूमिनीन उमारअल्
फ़ारुकअल्लज़ी अअज़ज़ल् लाहु बिहिल् इस्लामा
जज़ाकल्लाहु अज़न उम्माति मुहम्मदिन खैरा”।

● इन दोनों हज़रत पर सलाम के अल्फ़ाज़ में भी
कमी ज़्यादाती का अख़्तियार है और अगर किसी ने
सलाम पहुँचाने के लिए कहा हो तो उस का सलाम
भी पहुँचा दें।

● फिर इस के बाद अल्लाह तआला की हम्द व

सना बयान करे और दुरुद शरीफ पढ़े। अपने लिये और अपने वालिदैन्, मशायख्, अहबाब, अकारिब और सब मुसलमानों के लिए दुआ करें और मुझ नाकारा (मुहम्मद सरवर) की तरफ से सलाम भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दरबारे आली में पहुँचा दें और खात्मा बिल् खैर की दुआ भी फरमा कर ममनून फरमाएँ। जज़ाकुमुल्लाह।

● ज़ियारत के बाद दुआ से फारिग होकर दुरुद जिस कदर हो सके पढ़ें।

● उसके बाद हो सके तो 'सुतूने इनाना', 'सुतूने आइशा' और बाकी सुतूनों के पास दुआ इस्तिग़फ़ार करे, लेकिन ज़रूरी न समझे।

● यह ज़ियारत सिर्फ़ मर्दों के लिए मशरूअ है। औरतों के लिए क़ब्रों की ज़ियारत जायज़ नहीं। जैसा कि नबी (सल्ल०) से साबित है कि आप ने क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली औरतों और क़ब्रों पर मस्जिद बनाने वाले और चिराग़ जलाने वाले लोगों पर

कि यह अल्लाह तआला का हक़ है और उसी से माँगना चाहिए, जैसा कि उसी ने फरमाया-

قُلْ لِلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا (सूर: अल् जुमर-44)

कह दो सारी शफ़ाअतें अल्लाह ही के लिए हैं।

● अल्बत्ता यह कह सकते हैं कि ऐ अल्लाह! अपने नबी को मेरा शफ़ीअ बना, ऐ अल्लाह! अपने फ़रिश्तों और मोमिन बन्दों को मेरा सिफ़ारिशी बना, ऐ अल्लाह! मेरे फ़ौत शुदह बच्चों को मेरा सिफ़ारिशी बना, वग़ैरह, लेकिन मुद्दों से कुछ नहीं माँगना चाहिए न शफ़ाअत, न दूसरी चीज़, चाहे वह अम्बिया हों या ग़ैर अम्बिया इसलिए कि ऐसा करना मशरूअ नहीं।

मस्जिदे कुबा और जन्नतुल् बक़ीअ की ज़ियारत-

मदीना की ज़ियारत करने वाले के लिए मस्जिदे कुबा की ज़ियारत करना और उस में नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है। जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस सहीहैन में है कि नबी (सल्ल०)

लअनत फरमाई।

ज़ायर को चाहिए कि पाँचों वक़्त की नमाज़ें मस्जिदे नबवी में पढ़े और उस में कसरत से ज़िक्र, दुआ और नफ़ली नमाज़ों का एहतिमाम करे और ज़्यादा सवाब कमाने की इस फ़ुर्सत को ग़नीमत समझे। इसी तरह 'रौज़तुल् जन्नह' में कसरत से नफ़ली नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है।

ज़ियारत के वक़्त

● किसी के लिए यह जायज़ नहीं कि वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) से किसी हाज़त को पूरी करने या किसी मुसीबत को दूर करने या मरीज़ को शिफ़ा देने का सवाल करे, क्योंकि यह सब हाज़ात सिर्फ़ अल्लाह से माँगी जाती हैं। उन का वफ़ात याफ़ता शख्स से माँगना अल्लाह के साथ शिर्क़ है और ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत करना है।

इसी तरह किसी के लिए यह भी जायज़ नहीं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से शफ़ाअत मांगे, इसलिए

मस्जिदे कुबा की ज़ियारत सवारी पर और पैदल चलकर करते थे और उस में दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और सहल बिन हुनैफ़ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया-

“जिस ने अपने घर वुजू किया, फिर मस्जिदे कुबा आकर उस में नमाज़ पढ़ी उस के लिए एक उमरह का अज़्र है”।

इसी तरह बक़ीअ, शोहदा और उहद की क़ब्रों और हज़रत हम्ज़ह (रज़ि०) के क़ब्र की ज़ियारत भी मस्तून है, क्योंकि नबी (सल्ल०) उन की ज़ियारत करते और उन के लिए दुआ फरमाया करते थे और आप (सल्ल०) का यह इशार्द भी है, “क़ब्रों की ज़ियारत करो वह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती हैं”। (मुस्लिम)

क़ब्रों की ज़ियारत के वक़्त

नबी (सल्ल०) सहाबा-ए-किराम को तअलीम

देते थे कि जब वह कब्रों की ज़ियारत करें तो यूँ कहें,
 السَّلَامُ عَلَيْكَ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ وَإِنَّا أَنْشَاءُ
 اللَّهُ بِكُمْ لَا حَقُّونَ. اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا لِأَهْلِ
 الْبَقِيعِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُمْ.

“अस्सलामु अलैका दारा कौमिन मूमिनीन वइन्ना
 इन्शाअल्लाह बिकुम ला हिक्कूना अल्लाहुम्मग़िफ़र
 लना लिअहलिल् बकीअ। अल्लाहुम्मग़िफ़र लना
 वलाहुम”।

● “ऐ उस दियार के रहने वाले मोमिनों और
 मुसलमानों! तुम पर सलाम हो और हम भी इन्शाअल्लाह
 तुम से मिलने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मग़िफ़रत फ़रमा
 अहले बकी की और ऐ अल्लाह! मग़िफ़रत फ़रमा
 हमारी और उनकी”। (सहीह मुस्लिम)

● इन अहदीस से मालूम होता है कि कब्रों की
 शरअी ज़ियारत का मक़सद यह है कि वह आख़िरत
 की याद दिलाती हैं और इस से मुर्दों के साथ नेकी

मस्जिद किब्लतैन-

यह वह मस्जिद है जहाँ तहवीले किब्ला का हुक्म
 दिया गया था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जुह की नमाज़
 के दौरान बैतुल् मुक़द्दस से ख़ान-ए-कअब: की तरफ़
 मुँह फेर लिया था यह मस्जिदे नबवी से शिमाल मग़िब
 में वादी अक़ीक़ के करीब एक टीला पर है इस में एक
 मेहराब बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ और दूसरा
 ख़ान-ए-कअब: की तरफ़ है।

उहद का पहाड़-

उहद का पहाड़ अपनी अस्त शक्ल में अब तक
 मौजूद है। वह तमाम निशानात बाकी हैं जो हज़रत
 मुहम्मद (सल्ल०) से मन्सूब हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०)
 का इर्शाद है “उहद मुझ से मुहब्बत रखता है और मैं
 उहद से मुहब्बत रखता हूँ” मशहूर जंग उहद की
 इसी मक़ाम पर हुई थी। इस के करीब शोहदा-ए-उहद
 की कब्रें हैं। उन में सय्यदुश्शोहदा हज़रत हम्ज़ह
 (रज़ि०) की कब्र है और साथ ही हज़रत अब्दुल्लाह

करने और उन के लिए दुआ और रहम की दरख़ास्त
 करने का मौका मिलता है।

मदीना मुनव्वरह के अहम मक़ामात

मस्जिदे कुबा-

यह मस्जिदे कुबा अहदे नबवी (सल्ल०) की पहली
 मस्जिद है जो मदीना की आबादी से तीन मील के
 फासले पर है। नबी करीम (सल्ल०) का इर्शाद गिरामी
 है कि “जो शख्स बावुजू मस्जिदे कुबा में जाकर दो
 रकअत नफ़ल अदा करेगा, उसको उमरह का सवाब
 मिलेगा”।

मस्जिदे गुमामा-

यह मस्जिद मदीना शहर ही में है। रसूलुल्लाह
 (सल्ल०) यहाँ अ़ीदेन की नमाज़ पढ़ा करते थे। इसको
 मस्जिद मुसल्ली भी कहते हैं, हुज़ूर ने यहाँ नमाज़
 इस्तिस्का भी अदा फरमाई है।

बिन हब्श (रज़ि०) और मुअ़सब बिन उमैर (रज़ि०)
 की कब्रें भी हैं।

ख़न्दक़-

यह मशहूर ख़न्दक़ है जो कुफ़फ़ार के हमले के
 मुकाबले में खोदी गई थी उसके निशानात अभी
 बाकी हैं। उहद और ख़न्दक़ को देखकर रसूल करीम
 (सल्ल०) की दिफ़ाई स्कीमों की अहमियत का अन्दाज़ा
 होता है।

इसी जगह मसाजिदे ख़म्सा भी थी, जो इस्लाम के
 पाँच अज़ीम ज़रनलों के नाम पर मौसूम थी। हज़रत
 अबू बक्र सिदीक़ (रज़ि०) हज़रत उमर फारूक़ (रज़ि०)
 सय्यदना अली (रज़ि०) सय्यदना सुलेमान फारसी
 (रज़ि०) सय्यदना सअद बिन मआज़ (रज़ि०) और
 वह मस्जिद फतेह जहाँ हुज़ुरे पाक (सल्ल०) का खेमा
 था।) लेकिन अब यहाँ एक ही मस्जिद बना दी गई है।

नोट- यह सब मक़ामात टैक्सी वाले एक ही मर्तबः
 में करवा देते हैं। अगर पहले उन्हें बता दिया जाये

और किराया वगैरह तय कर लिया जाये तो वह खुद ही सब जगह पहुँचा देते हैं।

जन्नतुल् बक़ीअ-

यह मदीना पाक का मशहूर क़ब्रस्तान है जहाँ हज़ारों सहाब-ए-किराम (रज़ि०) और अहले बैत मद्रफ़ून हैं।

मस्जिदे नब्वी के सात सुतून

यूँ तो मस्जिदे नब्वी की हर जगह अहम है। मगर रियाजुल जन्नः के वह सात सुतून खासतौर पर काबिले ज़िक्र हैं।

1- सुतून इनाना-

यह मेहराब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मेम्बर से करीब है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) इस सुतून के पास खड़े होकर खुत्बा इर्शाद फ़रमाया करते थे। यही वह खजूर का दरख़्त है जो लकड़ी का मेम्बर बन जाने के बाद आप के जुदाई पर बच्चों की

बिस्तर बिछा दिया जाता था।

5- सुतून वफूद-

बाहर से आने वाले वफूद यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिद्मत में हाज़िरी देते थे आप उन से बातचीत फ़रमाया करते थे, उन में से अक्सर यहीं मुसलमान होते थे।

6- सुतूने हिर्स-

इस मक़ाम पर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) घर तशरीफ़ ले जाते तो कोई सहाबी पहरा देने के लिए आ बैठते थे।

7- सुतून जिब्रईल-

हज़रत जिब्रईल (अलै०) हज़रत दहिया कलबी की सूरत में वह्य लेकर तशरीफ़ लाते तो अक्सर इस जगह बैठे नज़र आते। दरअसल यह तमाम सुतून उस मस्जिद के हिस्से में हैं, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में थी।

तरह रोया था।

2- सुतून आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा

एक मर्तबा रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी मस्जिद में एक ऐसी जगह है कि अगर लोगों को वहाँ नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत का इल्म हो जाए तो वह कुरा अन्दाज़ी करने लगें। (तबरानी)

इस जगह की निशानी हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाई थी।

3- सुतून अबी लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु-

इस जगह एक सहाबी हज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०) का कुसूर माफ़ हुआ था, उन्होंने अपने आप को इस सुतून से बाँध लिया था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) अक्सर यहाँ नवाफ़िल अदा किया करते थे।

4- सुतून सरीर-

इस जगह सरवरे दो आलम (सल्ल०) एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे और रात को यहीं आप के लिए

भाग-7

उमरह से मुतअल्लिक़ ग़लियाँ

तवाफ की गलतियाँ

- ❶ कअबः की नामुकम्मल दीवार के अन्दर से तवाफ करना जिस ने ऐसा किया उस ने पूरे खान-ए-कअबः का तवाफ नहीं किया, इसलिए कि यह कअबः का एक हिस्सा है, इस तरह इस का हर वह चक्कर बातिल हो जाएगा जो कअबः की दीवार के अन्दर से किया हो।
- ❷ तवाफ के सातों चक्करों में तेज़ चलना, जबकि ऐसा करना तवाफ के सिर्फ़ तीन इब्तिदाई चक्करों के साथ खास है।
- ❸ हज़रे अस्वद को बोसा देने के लिए शिद्दत के साथ मज़ाहमत करना, कभी-कभी मारपीट और गाली गलौज की नौबत आ जाती है, ऐसा करना हरगिज़ सही नहीं। तवाफ के सही होने के लिए हज़रे अस्वद को बोसा देना हरगिज़ ज़रूरी नहीं, बल्कि दूर से उस की तरफ हाथ से इशारा

- करना और अल्लाहु अकबर कहना काफी होगा।
- ❹ हज़रे अस्वद को बरकत की नियत से छूना बिद्अत है, शरीअत में इस की कोई दलील नहीं, सुन्नत सिर्फ़ इस का इस्तिलाम और बोसा देना है अल्लाह तआला की अ़िबादत समझ कर।
 - ❺ खान-ए-कअबः के तमाम गोशों का इस्तिलाम और उस की तमाम दीवारों का इस्तिलाम और छूना, नबी करीम (सल्ल०) ने हज़रे अस्वद और रुक्न यमानी के अ़िलावह खान-ए-कअबः के किसी भी जुज़ का इस्तिलाम नहीं किया।
 - ❻ तवाफ के हर चक्कर के लिए अलग-अलग दुआ मख़सूस करना रसूलुल्लाह (सल्ल०) से साबित नहीं, सिर्फ़ इतना साबित है कि जब आप हज़रे अस्वद के पास आते तो तक्बीर कहते और हज़रे अस्वद और रुक्न यमानी के दर्मियान हर चक्कर के आख़िर में यह दुआ पढ़ते:-

رَبِّنَا اِتِّتَافِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

- ❷ बाज़ तवाफ करने वाले और तवाफ कराने वाले तवाफ की हालत में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हैं कि दूसरे तवाफ करने वालों को तश्वीश होती है, यह भी तवाफ की ग़लतियों में से है।
- ❸ मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ने के लिए मज़ाहमत करना ख़िलाफ़े सुन्नत है और इस से तवाफ करने वालों को तकलीफ़ पहुँचती है। मस्जिद में किसी जगह भी तवाफ की दो रकअतें पढ़ लेनी काफी होंगी।

सअी की ग़लतियाँ

- ❶ बाज़ लोग सफ़ा और मरवह पर पहुँच कर खान-ए-कअबः की तरफ़ रुख़ कर के तक्बीर कहते वक़्त अपने हाथों से उस की तरफ़ इशारा करते हैं जैसे नमाज़ के लिए तक्बीर कह रहे हों, इस तरह इशारा करना सही नहीं, सुन्नत यह है कि अपने हाथ इस तरह उठाये। जैसे दुआ के लिए उठाते हैं।

- ❷ बाज़ लोग सअी के दर्मियान पूरा वक़्त दौड़ते रहते हैं, हालांकि सुन्नत यह है कि सिर्फ़ दोनों हरे निशानों के दर्मियान दौड़े और बाकी चलता रहे।
- ❸ इसी तरह बाज़ लोग एहराम की चादर बग़ल के नीचे से निकाले रहते हैं, जो ग़लत है। कंधे से ओढ़े रहना चाहिए।

अरफ़ात की ग़लतियाँ

- ❶ बाज़ हुज्जाज हुदूदे अरफ़ात के बाहर ही पड़ाव डाल देते हैं और गुरुबे आप़ताब तक वहीं रहते हैं और वकूफ़े अरफ़ात के बग़ैर ही मुज्दलिफ़ा लौट आते हैं, यह बहुत बड़ी ग़लती है। इस से हज़ नहीं होता है इसलिए कि हज़ वकूफ़े अरफ़ा का नाम है। हाजी के लिए ज़रूरी है कि हुदूदे अरफ़ात के अन्दर रहे, अगर भीड़ की वजह से या किसी और वजह से ऐसा मुम्किन न हो तो गुरुब आप़ताब से पहले दाख़िल हो और गुरुब

तक ठहरा रहे। हुदूदे अरफ़ात में रात के वक़्त भी दाख़िल होना काफ़ी होगा और ख़ासकर कुर्बानी की रात में।

- ② बाज़ हाजी गुरुब आप़ताब से पहले ही अरफ़ात से लौट जाते हैं, ऐसा करना सहीह नहीं, इसलिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अरफ़ात में उस वक़्त तक ठहरा रहे जब तक आप़ताब पूरे तौर पर गुरुब न हो जाए।
- ③ बाज़ लोग जबले रहमत की चोटी तक पहुँचने के लिए भीड़ और दूसरों की ईज़ा रसानी का सबब बनते हैं, पूरे मैदाने अरफ़ा में किसी जगह भी वकूफ़ सहीह है और पहाड़ पर चढ़ना मशरूअ नहीं और न ही वहाँ नमाज़ पढ़ना सहीह है।

कुछ ख़ास लफ़्ज़ों की तशरीह

- (1) एहराम- एहराम के माने हराम करना। हाजी जिस वक़्त हज़ या उमरह की नियत करके तल्बिया पढ़ता है, तो उस पर कुछ चीज़ें

हलाल और मुबाह या हराम हो जाती हैं इसलिए इसको एहराम कहते हैं और ज़ाहिर में उन दो चादरों को भी एहराम कहते हैं जिनको हाजी एहराम की हालत में इस्तेमाल करता है।

- (2) तल्बिया- लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक..... पूरी पढ़ना।
- (3) तक्बीर- यानी 'अल्लाहु अकबर' कहना।
- (4) तस्बीह- यानी 'सुब्हानल्लाह' कहना।
- (5) तहलील- यानी 'लाइलाहा इल्लल्लाह' कहना।
- (6) इस्तिलाम- हज़्रे अस्वद को बोसा देना और हाथ से छूना या 'हज़्रे अस्वद' या 'रुक्न यमानी' को सिर्फ़ हाथ लगाना।
- (7) इज्तिबाअ- एहराम की चादर को दाहिने बग़ल के नीचे से निकालकर बाएँ कन्धे पर डालना।
- (8) अय्यामे नहर- दस ज़िलुहिज्जा से बारहवीं तक।

- (9) मोहरिम- एहराम बाँधने वाला।
- (10) जमरात- मिना में तीन मक़ाम हैं, जहाँ तीन सुतून बने हुए हैं यहाँ कंकरियाँ मारी जाती हैं इन्हें जमरात कहते हैं।
- (11) हलक़- सर के बाल मुंडाना।
- (12) हतीम- बैतुल्लाह के उत्तर जानिब दीवार से कुछ हिस्सा ज़मीन का घिरा हुआ है, उसको 'हतीम' या 'ख़तीरा' कहते हैं।
- (13) दम- एहराम की हालत में कुछ चीज़ें जो मना हैं उसके करने से बकरी वगैरह ज़िब्ड़ करना वाजिब हो जाती है उसे दम कहते हैं।
- (14) रुक्न यमानी- बैतुल्लाह के पश्चिम की ओर दक्षिणी कोने को कहते हैं।
- (15) रुक्न इराक़ी- बैतुल्लाह का रुक्न इराक़ी उत्तर की ओर पूर्वी हिस्सा को।
- (16) रुक्न शामी- बैतुल्लाह का पश्चिम की ओर

उत्तरी हिस्सा को।

- (17) रमल- तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में अकड़कर शाना (भुजाएँ) हिलाते हुए क़रीब-क़रीब क़दम रखकर तेज़ी से चलना।
- (18) रमि- कंकरिया फेंकना।
- (19) सअी- सफ़ा और मरवह के दर्मियान सात चक्कर लगाना।
- (20) शौत- बैतुल्लाह के चारों तरफ़ चक्कर लगाना।
- (21) हज़ तमततोअ- हज़ के महीनों में पहले उमरह करना, फिर उसी साल में हज़ का एहराम बाँधकर हज़ करना।
- (22) हज़ किरान- हज़ और उमरह दोनों का एहराम एक साथ बाँधकर पहले उमरह करना और फिर हज़ करना।
- (23) मुफ़रिद- सिर्फ़ हज़ का एहराम बाँधने वाला।
- (24) मीक़ात- वह जगह जहाँ से मक्का जाने वाले

- के लिए एहराम बाँधना वाजिब है।
- (25) मकामे इब्राहीम- जन्नती पत्थर इज़रत इब्राहीम (अलै०) जिस पत्थर पर खड़े होकर बैतुल्लाह को बनाया था, जो अब मताफ़ में पूरब की ओर एक शीशे में रखा हुआ है।
- (26) मुल्लतज़िम- इज़्रे अस्वद और बैतुल्लाह के दरवाज़े के दर्मियान की दीवार मीलैन, अख़ज़रैन, सफ़ा और मरवह के दर्मियान दो हरी लाइटें लगी हुई हैं जिन के दर्मियान दौड़कर चला जाता है।
- (27) उकूफ़- मैदान अरफ़ात या मुज्दलिफ़ा में ख़ास वक़्त में ठहरना।
- (28) यौमे अरफ़ा- नवीं ज़िलहिज्जा को।
- (29) यलमलम- यह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से आने वालों की मीकात है जहाँ से एहराम बाँधा जाता है।

उमरह के अरकान

- ① एहराम बाँधने के बाद नियत करना।
- ② बैतुल्लाह का तवाफ़ करना।
- ③ सफ़ा और मरवह की सज़ी करना। (बुख़ारी व मुस्लिम)
- ④ मीकात से एहराम बाँधना।
- ⑤ सारे सर के बाल छोटे करवाना या सर मुंडवाना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नियत और एहराम बाँधने का तरीका

इज़ी के लिए एहराम बाँधने से पहले मीकात से पहले गुस्ल करना और बदन को खुशबू लगाना मुस्तहब है और अगर मुस्कन हो तो इज़ामत वगैरह से भी फ़रागत हासिल कर लेनी चाहिए। मर्द एहराम के लिए दो सफ़ेद चादरें जो कि जिस्मानी ढाँचे के मुताबिक़ बनी हुई न हों, इस्तेमाल करें जबकि औरतों के एहराम के लिए कोई लिबास मख़सूस नहीं

भाग-8

उमरह करने का मुख्यसर तरीका

है, फिर दिल से अपने इज़ या उमरह की नियत करें और तल्बिया कहे और अगर कोई आदमी किसी की तरफ़ से इज़ कर रहा हो तो वह नियत करने के साथ **اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ حَجًّا** कहते हुए उसका नाम भी ज़िक्र करे। (बुख़ारी, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

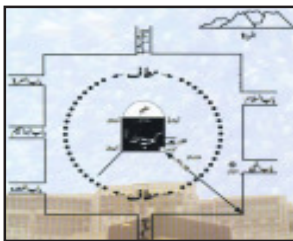
नोट- अगर इज़ व उमरह के लिए जाने वाले को मक्का मुकर्रमा तक पहुँचने में किसी किस्म की रुकावट का डर हो तो उसे नियत करते वक़्त यह कहना चाहिए **اللَّهُمَّ مَجْلَى حَيْثُ حَبَسْتَنِي** फिर अगर वह मक्का न पहुँच सका तो बगैर 'दम' दिये इलाल हो जाएगा (यानी एहराम खोल सकता है।) (बुख़ारी)

- ① बग़ल के बाल, ज़ेरे नाफ़ बाल, नाखून वगैरह कटा लें।
- ② गुस्ल या वुजू करें तो नियत करें कि एहराम बाँधने के लिए गुस्ल/वुजू कर रहे हैं।
- ③ दो बगैर सिली हुई चादर बाँध लें, दोनों शानों को ढका रखें और अगर मकरुह वक़्त न हो तो

- सर ढांक कर दो रकअत नमाज़ एहराम की नियत से पढ़ें।
- 4 फिर सर से कपड़ा हटा लें और बैठे हुए उमरह की नियत करें- *या अल्लाह! मैं उमरह नियत करता हूँ, बस उस को मेरे लिए आसान बना दे और कुबूल फ़रमा* फिर तीन बार तल्बिया पढ़ें, उस के बाद दुरूद शरीफ़ और फिर दुआ माँगें।
- 5 एहराम की हालत में ऐसा जूता पहनना मना है जो बीच क़दम की उभरी हुई हड्डी को ढांप ले, बेहतर है कि दो पट्टी वाली हवाई चप्पल पहनें।
- 6 दोनों शाने ढाका रखें, हरम शरीफ़ जाएँ दाहिना पैर अन्दर रखें, मस्जिद में दाख़िले की दुआ पढ़ें, हरम शरीफ़ में दाख़िल हों और एतिकाफ़ की नियत करें।
- 7 बैतुल्लाह पर नज़र डालें तो उस पर निगाह जमा दें और दुआ माँगें।
- 8 तक्बीर, तल्बिया और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए

- बैतुल्लाह तक पहुँचें और काली पट्टी से कुछ पहले बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के खड़े हो जाएँ।
- 9 अब यहाँ छः काम करना है-
तीन काम हरी लाइट से पहले करें। यानी
(i) तल्बिया पढ़ना बन्द कर दें।
(ii) इज़्तिबाअ करें यानी एहराम की ऊपर वाली चादर को दाहिनी बग़ल से निकाल कर बाएँ कंधे पर डालें।
(iii) तवाफ़ की नियत करें।
(ब) तीन काम हरी लाइट के सामने करें। उस के लिए ज़रा दाएँ चलें। काली पट्टी पर इस तरह आ जाएँ कि सीना और मुँह हज़रे अस्वद की तरफ़ हो यानी हज़रे अस्वद का इस्तिक़बाल हो जाए।
और उस के बाद यह पढ़ें-
(i) بِسْمِ اللَّهِ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ कहते हुए कानों तक हाथ उठाकर गिरा दें।

- (ii) हज़रे अस्वद का इस्तिलाम करें।
(iii) अपनी जगह पर खड़े-खड़े दाएँ तरफ़ मुड़ जाएँ और तवाफ़ शुरू करें।
- 10 तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में रमल करें यानी अकड़कर शाना हिलाते हुए करीब-करीब क़दम रखते हुए तेज़ी से चलें, तवाफ़ के बाकी चक्करों में रमल न करें।
- 11 तवाफ़ के दूसरे और बाद के चक्करों में जब लौट कर हरी लाइट पर पहुँचें तो फिर सीना और मुँह हज़रे अस्वद की तरफ़ करें। अब कानों तक हाथ उठाएँ हज़रे अस्वद का इस्तिलाम करें, फिर पहले की तरह दाएँ तरफ़ मुड़कर तवाफ़ शुरू करें।



- 12 तवाफ़ के सातवें चक्कर के बाद हज़रे अस्वद का आठवाँ इस्तिलाम होगा।
- 13 तवाफ़ ख़त्म कर के दोनों शानों को दोबारा ढांक लें।
- 14 मुल्लज़िम पर आएँ और दुआ माँगें।
- 15 मक़ामे इब्राहीम (अलै०) या उस के पास दो रकअत नमाज़ वाजिबुल्लाह तवाफ़ पढ़ें।
- 16 नमाज़ वाजिबुल्लाह अदा करने के बाद ज़मज़म का पानी पीना मुस्तहब है।
- 17 आबे ज़मज़म पीने के बाद सज़ी के लिए सफ़ा पर आएँ और सज़ी की नियत करें।
- 18 सफ़ा पर तक्बीरे तहरीमा की तरह हाथ न उठाए बल्कि क़िब्ला रुख़ होकर इस तरह हाथ उठाए जैसे दुआ में उठाए जाते हैं। फिर बुलन्द आवाज़ से तीन मर्तबः
اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ
पढ़ें। चौथा कलिमा, तीसरा कलिमा पढ़ें दुरूद शरीफ़

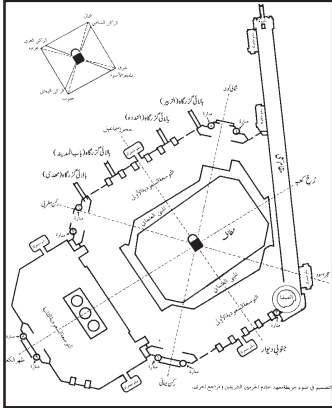
पढ़ें और दुआ माँगें, मरवह पर भी यही करें।

19 सफ़ा और मरवह के दर्मियान सज़ी करें। दौराने

सज़ी चौथा
कलिमा पढ़ते
रहें और हर
चक्कर में ख़ूब
दुआ माँगें।

20 सफ़ा और
मरवह के
दर्मियान
सब्ज़ सुतूनों
की जगह
तेज़ चलते
हुए दुआ पढ़ें।

21 सज़ी से फ़ारिग़ होने के बाद अगर मकरुह
वक़्त न हो तो मस्जिदे हराम में आकर दो
रकअत नफ़ल अदा करें।



नोट-

- 1 हतीम को शामिल कर के तवाफ़ करें। यह वाजिब है।
- 2 ख़याल रखें कि दौराने तवाफ़ निगाह सामने हो, इधर-उधर न देखें।
- 3 तवाफ़ के दौरान दुआ की तरह हाथ न उठाएँ या नमाज़ की तरह हाथ न बाँधें।
- 4 दौराने तवाफ़ बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह न करें, यह नाजायज़ है। बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह करना सिर्फ़ हज़रे अस्वद के इस्तिक्बाल के वक़्त जायज़ है।
- 5 मक़ामे इब्राहीम (अलै०) को बोसा देना या उस का इस्तिलाम करना मना है।
- 6 अगर दुआओं के अरबी अल्फ़ाज़ याद न हों तो अपनी ज़बान में दुआ माँगना जायज़ और बेहतर है कि कम से कम यह तो मालूम होगा कि दुआ माँगने वाला कह क्या रहा है अगर किसी दूसरे का सलाम पहुँचाना हो तो वह भी अपनी

ज़बान में मुखातब होकर अर्ज़ करना मुनासिब है।
अल्लाह तआला हम सब के हज़ व उमरह और
ज़ियारत को कुबूल फ़रमाए। (आमीन)

इस सफ़र में ख़ाक़सार (मुहम्मद सरवर) को
भी हुस्ने ख़ात्मा की दुआ फ़रमा दें इनायत होगी।

दुआओं का तालिब
मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी
उस्ताद, दारुल उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ



(मुफ़त्सिरे कुआन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी
साहब द्वारा लिखित कुछ महत्त्वपूर्ण हिन्दी पुस्तकें

1. कुआन का पैग़ाम (कुआन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
2. कुआन का पैग़ाम (कुआन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
3. कुआन का पैग़ाम (कुआन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
4. कुआन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)
5. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-1)
6. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-2)
7. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-3)
8. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-4)
9. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-5)
10. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-6)
11. तफ़्सीर फ़ारुकी (भाग-7)
12. इस्लाम धर्म क्या है? (कुछले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स)
13. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम
14. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन
15. अन्तिम सन्देश कहां, कब और कौन (Hard bound)
16. अन्तिम सन्देश कहां, कब और कौन (Paper back)
17. जन्नत के हालात और जन्नती
18. कुफ़्र और शिर्क की हकीकत
19. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक
20. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी

21. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार
22. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअमाले इस्ना की रोशनी में)
23. सद्दाबा का इस्लाम और उसके बाद
24. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था
25. अज्ञान क्या है?
26. आओ नमाज़ की ओर
27. रोज़: का हुक्म और उसके मसायल
28. हज और उमरा का आसान तरीका
29. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल
30. उमरह का आसान तरीका
31. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)
32. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअवीज़, गंडे
33. इस्लाम की बुनियादी मालूमात
34. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत
35. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी
36. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअत की रोशनी में)
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन
38. सूर-ए-फ़ातिहा की तफ़सीर
39. तौहीद की हकीकत (कुआन व सुन्नत की रोशनी में)
40. पवित्र कुआन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम
41. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से
42. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)
43. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी
44. इस्लामी विरासत की तक्सीम एक नज़र में